ओ३म्

इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 04 नवम्बर 2012

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 04 नवम्बर, 2012 से 10 नवम्बर, 2012

का. कृ. 05 – ● वि० सं०–2069 ● वर्ष 77, अंक 30, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 189 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,113 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

राष्ट्र समृद्धि के लिए हुआ 11 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

राष्ट्र की समृद्धि की कामना के लिए आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा के प्रांगण में 11 कुण्डीय विशाल यज्ञ के आयोजन में सैकड़ों आर्य जनों ने आहुतियां दी। सम्पूर्ण वातावरण सुगंधमय होकर वेदमंत्रों एवं स्वाहा! के उच्चारण से गूंज उठा। गुरुकुल सासनी की मुख्य अधिष्ठात्री कमला जी स्नातिका के आचार्यत्व में सम्पन्न राष्ट समृद्धि यज्ञ में गुरुकुल की 5 ब्रहचारिणियों ने वेद मंत्रों से आहूति दिलाई।

कमला जी स्नातिका ने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठ करने का स्त्री–पुरुष तथा सभी जाति एवं वर्ण के लोगों को समान अधिकार है। यज्ञ से परिवार में सुख आता है।, संसार में शांति एवं सद्भाव प्रसारित होकर पृथ्वी स्वर्ग बनती है। अतः मनुष्य को पृथ्वी में यज्ञ करना चाहिए।

आर्य गुरूकुल होशंगाबाद के आचार्य श्री योगेन्द्र जी ने कहा यज्ञ ईश्वर उपासना की श्रेष्ठतम पद्धति है यज्ञ से आत्मिक विकास होता है। हमें यज्ञ की संस्कृति अपनानी चाहिए। यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध पुष्ट एवं सुगन्धित होता है। यज्ञ से रोग दूर होकर आरोग्यता आती है।

विजनौर के भजनोपदेशक भीष्म जी ने गीतों के माध्यम से यज्ञ की महत्ता इस अवसर पर जिला आर्य समाज के प्रधान अर्जुन देव चढ़डा सहित आर्य समाज के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। शांति पाठ से यज्ञ का समापन हुआ।

वेस्ट पटेल नगर दिल्ली में हुआ वैदिक यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पश्चिमी पटेल नगर में महात्मा आनन्द स्वामी जी की स्मृति में वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन में मुख्य यजमान पाठशाला की प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता थीं। हवन में पाठशाला के कक्षा तीन से सात तक सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया।

हवन का मुख्य उद्देश्य बच्चों को आनन्द स्वामी जी के बचपन की घटनाओं से अवगत करवाना था। धर्म–शिक्षा अध्यापिका ने आनन्द स्वामी

जी के बारे में बताया कि किस प्रकार गायत्री मंत्र के जाप से उनकी बुद्धि निखर गई तथा उनका ज्ञान, मनोबल तथा तपोबल भी गायत्री मंत्र के जाप का प्रसाद था। वे स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। संन्यासी बनने के बाद उन्होंने उन सभी स्थानों के दर्शन किए जहां स्वामी जी ने तप किया था। इस हवन के सम्पन्न होने पर सबने संकल्प लिया कि हम सब भी प्रतिदिन मन लगाकर गायत्री मंत्र का जाप करेंगे तथा गायत्री मंत्र के अर्थ को भी प्रतिदिन गाएंगें।

डी.ए.वी. कोटकपूरा में वृक्षारोपण समारोह

डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल कोटकपूरा पंजाब में वनमहोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया गया। इस समारोह का आरंभ यज्ञ के साथ किया गया। तदुपरांत विद्वार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार के वृक्षों को आरोपित किया गया। विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण करते हुए विद्यार्थियों के अंदर असीम उल्लास भरा हुआ था। विद्यार्थी नारे लगा रहे थे–

"वृक्ष धरा के भूषण हैं, वृक्ष रहेंगे हम रहेंगे"

प्राचार्या सुश्री मीना मेहता ने अपने विद्यालय रावन में वृक्षारोपण किया तथा छात्रों और अध्यापकों द्वारा बढ़ चढ़ कर किए गए प्रयासों के लिए तथा धरा को हरा भरा बनाए रखने के लिए संकल्प की भूरि–भूरि प्रशंसा की और बताया कि वृक्ष हमें जीवन देते हैं। जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हमें वृक्षों से ही प्राप्त होती हैं। यदि हम इनकी रक्षा नहीं करते हैं और इन्हें काटते हैं तो प्रकृति निष्ठुर होकर हमसे बदला लेती है। उन्होंने विद्यार्थियों से यह संकल्प भी करवाया कि अपने जन्मदिन पर एक एक वृक्ष अवश्य लगाएँगे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 04 नवम्बर 2012 से 10 नवम्बर 2012

ओ३म् प्रतिष्ठ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोतु,
अरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह
मादयन्ताम्, ओ३म प्रतिष्ठ।।

यजु. २.१३

ऋषिः **परमेष्ठी प्रजापतिः।** देवता **बृहस्पतिः।** छन्दः **जगती।**

● (**जूतिः**) वेगवान्, (**मनः**) मन, (**आज्यस्य**) घृत आदि यज्ञ–सामग्री को, (**जुषतां**) प्राप्त करें।, (**बृहस्पतिः**) आत्मा, (**इमं**) इस, (**यज्ञं**) यज्ञ को, (**तनोतु**) फैलाये, (**इमं**) इस [यज्ञ] को, (**अरिष्टं**) अहिंसित, अविघ्नित रूप में, (**सं दधातु**) संधान करता रहे।, (**विश्वे**) सब, (**देवासः**) इन्द्रियाँ और विद्वज्जन, (**इह**) इस यज्ञ में, (**मादयन्ताम्**) तृप्त हों। (**ओ३म्**) हे परमात्मन्! [आप भी इस यज्ञ मे], (**प्रतिष्ठ**) प्रकृष्ट रूप से स्थित हों।

● हमने यज्ञ का आयोजन किया है। सब संभार एकत्र कर लिया है। घृत, हवन–सामग्री, समिधा, जल–पात्र, आचमनी आदि सब तैयार हैं। निमन्त्रित विद्वद्गण भी आ गये हैं। यजमान और ऋत्विज्–जन भी अपने–अपने आसनों पर विराजमान हैं। अब विलम्ब क्यों किया जाये? यज्ञारम्भ करना ही चाहिए। पर मन और आत्मा को समाहित किये बिना यज्ञ कैसे चल सकता है? अतः मन और आत्मा को तो सावधान एवं समाहित कर लिया जाये। मन घृत आदि सब यज्ञ–पदार्थों का निरक्षण कर ले कि कोई वस्तु गली, सड़ी, घुनी, न्यून, अधिक आदि तो नही है? और जबतक यज्ञ समाप्त न हो जाये, यज्ञ की ओर ही संलग्न रहे और यज्ञविषयक ही चिन्तन करता रहे। आत्मा–रूप बृहस्पति यज्ञ को फैलाये। जिन–जिन मन्त्रों का यज्ञ में उच्चारण किया जाये उन सबका मन द्वारा भी चिन्तन करता रहे, और जो–जो विधि–विधान निष्पन्न किये जायें, उन सबका अभिप्राय समझता चले। तीन समिधाओं का आधान, घृताहुति, जलसेचन आदि विधियाँ क्यों की जा रही हैं, इसका तात्पर्य हृदयंगम करता चले। यज्ञ का जो भी विस्तार है वह सब आत्म–बोध के साथ होना चाहिए। आत्मा–रूप बृहस्पति अहिंसित, अविघ्नित रूप में यज्ञ का सन्धान करता रहे, यज्ञ–तंतु त्रुटित होने लगे तो उसे जोड़ता रहे। सब इन्द्रिय– रूप देव इस यज्ञ से तृप्त हों। चक्षु, श्रोत्र आदि इन्द्रियाँ यज्ञ से तभी तृप्ति–लाभ कर सकती हैं, जब वे यज्ञ की और ही संलग्न रहें। आँख यज्ञ को ही देखे, कान यज्ञ–मन्त्रों का ही श्रवण करें, जिह्वा यज्ञ–मन्त्रों का ही उच्चारण करे, घ्राण यज्ञिय गन्ध को ही ग्रहण करे। देव शब्द से उपस्थित विद्वान् जन भी ग्राह्य हैं। वे भी यज्ञ में आकर तृप्ति–लाभ करें, ऐसा अनुभव न करें कि यह समय व्यर्थ गँवाया।

अन्तिम, किन्तु सर्व–प्रमुख, वस्तु है 'ओ३म्', जिसे यज्ञ में प्रतिष्ठित रहना चाहिए। यज्ञ में पठित होनेवाले प्रत्येक मन्त्र का आरम्भ हो हम 'ओ३म्' के साथ करते ही हैं, पर उतना ही पर्याप्त नहीं है, हमारे मन में यज्ञ करते समय प्रतिक्षण 'ओ३म्' पद के वाच्य ब्रह्म का ध्यान रहना चाहिए। हे 'ओ३म्'! तुम हमारे यज्ञ में प्रकृष्ट–रूप से स्थित हो जाओं।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

उपनिषदों का संदेश

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में हमने पढ़ा कि **'पर'** और **'अपर'** दो ब्रह्म नहीं है। एक ही ब्रह्म के दो प्रकार हैं, एक ही ब्रह्म की दो अवस्थायें हैं। **'परब्रह्म'** वह अवस्था है जहाँ वह प्रकृति से परे अपने–अपने में अपने ही परमानन्द में मग्न होकर विद्यमान है। **'अपर ब्रह्म'** ईश्वर की वह अवस्था है जहां वह प्रकृति के साथ, उसमे अपनी शक्ति का संचार करता हुआ, यह संसार बनाकर उसे साक्षीरूप से देखता हुआ विद्यमान है। उपनिषद् इसे **'पर'** और **'अपर'** विद्या भी कहते हैं। आजकल की भाषा में इसे **'अध्यात्मवाद'** और **संसारवाद'** भी कह सकते हैं।

संसार में जो कुछ भी है वह **'अपर'** है और इससे परे आत्मदर्शन और प्रभु की परमानन्द से भरी गोद में जाकर परम शान्ति और मुक्ति यह **पर** है।

अब आगे...........

और उपनिषद् का ऋषि कहता है कि जो भक्त ओ३म् का ध्यान करता हुआ उसे अपने मन और आत्मा में धारण करके इस शरीर को छोड़ता है वह पर ब्रह्म या अपर ब्रह्म, दोनों में से जिसको भी चाहे उसे प्राप्त कर लेता है। इसलिए वेद भगवान् और ईशोपनिषद् ने कहा– **ओम् क्रतो स्मर।**

'ओम् इस संसार का रचयिता है। प्रत्येक वस्तु का स्वामी है। इसका स्मरण कर।' इसीलिए महर्षि यम ने नचिकेता को कहा–

एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

"इस अक्षर 'ओम्' को धारण करने वाला, इसका ध्यान करने वाला और इसको जानने वाला जो कुछ भी चाहे, वहीं उसको मिल जाता है।"

परन्तु जानने का अर्थ क्या है? क्या यह कि आप एक कथा सुनने के लिए आये, वहाँ किसी ने ओम् का वर्णन कर दिया, आपने जान लिया और कह दिया कि मैं जानता हूँ? नहीं, यह अक्षर को जानना नहीं। अक्षर को जानने का अर्थ क्या है, यह आगे चलकर बताऊँगा। अभी केवल यह सुनिये कि इस अक्षर ओम को जानने, इसका ध्यान करने से क्या होता है। पर और अपर ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है इससे। जो कुछ भी भक्त चाहे वही उसको मिल जाता है। इसलिए महर्षि यम ने आगे चलकर कहा–

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

सुनो नचिकेता! और तुम भी सुनो ऐ संसार के लोगों! "यह जो अक्षर ओम् है न–इसी का सहारा सबसे बड़ा सहारा है। इसी का सहारा सबसे ऊपर ले–जाने वाला है। इसी के सहारे को जानकर भक्त लोग ब्रह्मलोक को प्राप्त कर लेते हैं।"

परन्तु प्रश्नोपनिषद् में सत्यकाम ने जब महर्षि पिप्पलाद से सुना कि ओम् का ध्यान करने से मनुष्य को सब–कुछ मिल जाता है तो उसने कहा–"महाराज! आपकी बाते सुन ली, समझ भी ली, परन्तु यह तो बताइये कि ओम् का जाप, ओम् का ध्यान करना कैसे होगा?

महर्षि पिप्पलाद ने कहा, "सुनो सत्यकाम! यह जो अक्षर ओम् हैं, इसमें तीन मात्राएँ हैं। तीन मात्रा से ही इसका जाप और ध्यान होता है। तीन मात्राएँ हैं अ, उ, म्। परन्तु तीन मात्रा के जाप करने का यह अर्थ नहीं कि पहले 'अ' का जाप करो, फिर 'उ' का और तब 'म' का। नहीं, यह अर्थ नहीं। तीन मात्रा से जाप करने का तात्पर्य क्या हैं? यह भी सुनिये। एक मात्रा से जाप का अर्थ है ओम् की स्थूल शरीर के द्वारा उपासना। दो मात्रा के जाप का अर्थ है ओम की मानसिक उपासना और तीन मात्रा से अर्थ है ओम् की आत्मिक उपासना।"

अब यह भी सुनिये कि यह एक, दो और तीन मात्रा की उपासना होती किस प्रकार है? एक मात्रा से ओम् की उपासना करने की विधि यह है कि ईश्वर का थोड़ा ध्यान करके, ग्रीवा और कमर को सीधा करके, सुखासन, पद्मासन या सिद्धासन में बैठे जाइये। आँखे पूरी नहीं, थोड़ी मूँद लीजिये और तब ऊँचे स्वर में ओम् का जाप कीजिये। देखिये, मैं आपको यह जाप करके दिखाता हूँ। यह

शारीरिक जाप है, अतः दिखाना कठिन नहीं। ओम् को आरंभ कीजिये तो इस प्रकार कि 'ओ' की ध्वनि आपके हृदय से आरम्भ हो। तब ऊपर ले चलिये इस ध्वनि को–ऐसा अनुभव कीजिये कि सारे संसार में, मैंदानों में, खेतों में, मकानों, पर्वतों, मेघों, चन्द्रमा और सूर्य से ऊपर तारों–सितारों एवं महासौर–मण्डलों से भी परे तक प्रत्येक वस्तु इस ध्वनि से भरपुर होती जाती है। जहाँ भी यह ध्वनि पहुँचती है वहां ईश्वर है, वहीं उसकी शक्ति है। तब शनैः–शनैः इस ध्वनि को नीचे लाइये और 'म' बोलते समय हृदय में समाप्त कर दीजिये।

देखिये इस प्रकार–

(और उन्होंने नेत्रों को अर्धनिमीलित करके पण्डाल को, बाहर की सड़कों को, समीप के मकानों को गुँजाती हुई ऊँची ध्वनि में 'ओ३म्' का जाप आरम्भ कर दिया। कितने ही लोग उनके साथ बोलने लगे। कितने ही व्यक्तियों ने ऐसे अनुभव किया कि सारा वातावरण इस ध्वनि से भरपूर हो उठा है। तब पूज्य स्वामी जी ने कहा–)

इस प्रकार ओम् का जाप कीजिये। यह एक मात्रा के जाप की एक विधि है। दूसरी विधि यह है कि अपने ओष्ठ और जिह्वा मत हिलाइये। नाक से जैसे गुनगुनाया जाता है, इसी प्रकार ओम् का उच्चारण कीजिये।

इस प्रकार एक मात्रा के जाप से मनुष्य लोक में जो कुछ भी है, वह सब आपको मिलेगा–धन, सम्पत्ति, शासन, परिवार, बेटियाँ, बेटे, मोटरें, घोड़े, हाथी आदि।

कई सुनने वाले कह रहे होंगे, चलो भाई, अब तो आनन्द हो गये। यह जाप तो बहुत सरल है। कर लेंगे यह जाप और फिर धन, सम्पत्ति, शासन और शक्ति सब–कुछ मिलेगा। परन्तु सुनो! इतना सरल नहीं हैं यह कार्य। ऋषि कहता है कि एक मात्रा के जाप से मनुष्य लोक की प्रत्येक वस्तु मिलेगी, परन्तु इस शर्त के साथ मिलेगी कि पहले अपने अन्दर तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा उत्पन्न करो। तप का अर्थ है कि शारीरिक साधना, ब्रह्मचर्य का अर्थ है मानसिक साधना और श्रद्धा का अर्थ है आत्मिक साधना। शरीर, मन और आत्मा को ईश्वर के अर्पण करके ओम् की एक मात्रा का स्थूल शरीर से जाप करो तो धन, सम्पत्ति, शक्ति और शासन, प्रत्येक वस्तु मिलेगी। न मिले तो मैं उत्तरदायी। यह है एक मात्रा से जाप करने की विधि।

अब दो मात्रा के जाप करने की विधि सुनिये। एक मात्रा से जाप करने का अर्थ है स्थूल शरीर से जाप करना। दो मात्रा से जाप करने का अर्थ है स्थूल शरीर को भूलकर, उस शरीर के भीतर आकर, सूक्ष्म शरीर में पहुँचकर, वहाँ बाहर के ओष्ठ अथवा जिह्वा को हिलाए बिना, हृदय में ओम् का जाप कीजिये।

इस शरीर में–बिल्कुल इसी रूप का–पाँच ज्ञानेन्द्रियों पाँच प्राण, पाँच तन्मात्राओं, मन और बुद्धि, 17 वस्तुओं का एक अँगुठे–जितना सूक्ष्म शरीर है। इसे 'अँगुष्ठ शरीर' भी कहते हैं। परन्तु अँगुठे के जितना या अँगुष्ठ शरीर कहने का यह अर्थ नहीं कि आप इन आँखों से उसे देख सकते हैं। दिखाई नहीं देता वह। सूक्ष्म शरीर है। हृदय के भीतर रहता है। ध्यान के द्वारा इसमें प्रविष्ट होकर ओम् का जाप करना ही दो मात्रा का जाप है। इस जाप से, इस प्रकार ओम् की उपासना करने से मन को शान्ति मिलती है। सभी चिन्ताएँ, सभी प्रकार के मानसिक कष्ट, क्लेश, दुःख, संकट सब दूर हो जाते हैं। ऋषि कहते हैं कि दो मात्रा के जाप से भक्त 'सोमलोक' में पहुँच जाता है। सोमलोक का अर्थ है चन्द्रमा। चन्द्रमा से मन का सम्बन्ध है। चन्द्रलोक में पहुँचने का अर्थ यह है कि मन में शीतलता और शान्ति आ जाती है और इस शान्ति के कारण सर्वप्रकार की चिन्ताओं और कष्टों से मुक्ति पाता हुआ मन इस प्रकार चमक उठता है जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा चमकता हो।

इसके पश्चात् तीन मात्रा के जाप की विधि यह है कि दो मात्रा का जाप करते समय जिस प्रकार स्थूल शरीर को भुलाया था, उसी प्रकार अब सूक्ष्म शरीर को भी भुला दो। स्थूल शरीर नहीं, सूक्ष्म शरीर नहीं, सूक्ष्म शरीर के भीतर आत्मा बैठा है, इसके साथ ही परमात्मा। आत्मा को परमात्मा से मिला दो। तब ओम् का जाप न करो। ध्यान लगाकर अनुभव करो कि हृदय में स्वयमेव यह जाप हो रहा है। आत्मा परमात्मा में मिला दो। तब ओम् का जाप न करो। ध्यान लगाकर अनुभव करो कि हृदय में स्वयमेव यह जाप हो रहा है। आत्मा परमात्मा में मिल गया है। इसके मिलाप से ओम्–ओम् की ध्वनि गूँज रही है। ध्यान लगाने पर यह ध्वनि सुनाई देगी। इसी को अजपा जाप कहते हैं। प्रयत्न नहीं करना पड़ता, स्वयमेव ओम् का जाप होता रहता है। इस प्रकार तीन मात्रा से ओम् की उपासना होती है जिससे आत्मिक आनन्द मिलता है।

यह सब–कुछ महर्षि पिप्पलाद ने भक्त सत्यकाम को कहा परन्तु तैत्तिरीय उपनिषद् के ऋषि ने तो कमाल कर दिया। उन्होंने कहा–

ओमिति ब्रह्म। ओमितीदं सर्वम्।
ओमित्येतदनुकृतिः।

"ओम् ही ब्रह्म है। ओम् ही यह सब–कुछ है। जो दिखाई देता है, सुनाई देता है, सुझाई देता है और जो विद्यमान है, ओम् की ही कृपा है यह सब। ये मनुष्य और पशु–पक्षी, पर्वत और सागर, फूल और पत्ते, वृक्ष और बेलें, ओषधियाँ और बवण्डर, लहलहाते खेत, झुमते हुए उद्यान, इनके प्रत्येक पत्ते, पुष्प, प्रत्येक वस्तु में उसकी शक्ति कार्य कर रही हैं। उसके बिना और किसी की शक्ति नहीं।"

ईशावास्यमिदं सर्वम्।

"यह सब–कुछ, यह सारा संसार ईश्वरमय है, ईश्वर से भरपूर।" कोई एक छोटे–से–छोटा कण, छोटे–से–छोटा अणु, परमाणु, कोई वस्तु भी ऐसी नहीं जो उसके बिना हो। इसलिए छान्दोग्य–उपनिषद् के ऋषि ने कहा–

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत्।

"ओम्–इस अक्षर को गाओ, ऊँची ध्वनि में।" यह समझकर गाओ कि यह सारा संसार, इस पृथिवी के अणु–अणु से लेकर आकाश के अरबों–खरबों सूर्यों तक इसका विराट रूप है। गाकर उपासना करने का अर्थ यह है कि जितना ऊँचा बोल सकते हैं उतना ऊँचा बोलिये, खूब ज़ोर से बोलिये, इस प्रकार कि कोई अन्य शब्द सुनाई न दे।

परन्तु तनिक ठहरिये! अपने घर में जाकर इस प्रकर पञ्चम स्वर में गाना न आरम्भ कर दीजिये। नहीं तो आपके पढ़ने–लिखनेवाले बच्चे कहेंगे कि आनन्द स्वामी ने यह क्या संकट उत्पन्न कर दिया हमारे लिए? ऐसे नहीं किसी एकान्त स्थान में। और यदि घर में जाप करना हो तो किसी एकान्त कमरे को बन्द करके 'ओम्' की गाकर उपासना कीजिये।

परन्तु एक बात भूल गया आपको बताना। अभी तीन मात्रा से ओम् की उपासना की बात कह रहा था। उसमें यह बताना भूल गया कि जो व्यक्ति तीन मात्रा से ओम् की उपासना करता है उसे मिलता क्या है। यह संसार तो 'बनियों का संसार' हो गया है। जब तक किसी बात से लाभ न हो तब तक कोई उसे करना ही नहीं चाहता। तो सुनो भाई, लाभ की बात सुनो! यह तो मैं आपको बता चुका कि ओम् के जाप से धन–सम्पत्ति, शक्ति और शासन, स्वास्थ्य और आयु सब–कुछ मिलता है। यह भी बता चुका कि इनसे मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है, परन्तु प्रश्नोपनिषद् में महर्षि पिप्पलाद कहते हैं–जो व्यक्ति इस ओम् नाम की तीन मात्रा से उपासना करता है और उस परम पुरुष, परमदेव परमात्मा का ध्यान करता है वह सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है। जैसे साँप केंचुली से छूट जाता है इसी प्रकार वह भक्त, वह साधक वा साधिका पाप से मुक्ति पा लेती है। इसके सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। बताओ, इससे बड़ी बात भी कोई हो सकती है? इससे बड़ा लाभ भी हो सकता है? जन्म–जन्म के पाप यदि नष्ट हो जायँ तो फिर शेष और क्या चाहिए!

इसीलिए छान्दोग्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, मुण्डक, प्रश्न और दूसरे सभी उपनिषदों के ऋषियों ने बार–बार कहा–ओम् का जाप करो, ओम् का उपासना करो, ओम् का ध्यान करो–

ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानम्।

"ओम् के द्वारा आत्मा का ध्यान करो।"

गुरु ने जब भक्त से कहा कि आत्मा का ध्यान करो और कोई भक्त बोल उठा, "महाराज! आत्मा का रूप नहीं, फिर उसका ध्यान कैसे करें?" तब गुरु ने कहा, "आत्मा का ध्यान ओम् के द्वारा करो।" कितना सरल उपाय है।

कुछ भाई पूछ सकते हैं कि अच्छा आनन्द स्वामी! आत्मा का ध्यान तो ओम् के द्वार करें, परन्तु ओम का ध्यान कैसे करें? तो सुनिये, ओम् के ध्यान की विधि भी बताता हूँ। इसका वर्णन मुण्डक, कठ और श्वतोश्वतर उपनिषद् में भी आया है–

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्।।

"जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ मन के साथ निर्मल हो जायँ और बुद्धि भी शान्त हो जाय, उस अवस्था को ज्ञानी लोग परमगति कहते हैं।" इस परमगति या समाधि को ज्ञानी लोग परमगति कहते हैं।" उस परमगति या समाधि की अवस्था में पहुँचकर ही ओम् का ध्यान करना चाहिए।

अब आप कहेंगे कि यह तो नई उलझन आ पड़ी। हमने पूछा था ओम् का ध्यान कैसे करना, तुमने बता दिया कि परमगति में पहुँचकर करो, परन्तु अब बताओं की इस परमगति को कैसे प्राप्त करें? तो सुनो मेरे भाई! उपनिषद् इस परमगति को प्राप्त करने का साधन भी बताता है। पहला साधन है–

आहारशुद्धौ सत्तवशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ
ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृतिस्तम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।।

सुनो! सुनो ऐ संसार के लोगो! ओ बारम्बार शिकायत करने वालो! तुम जो कहते हो न कि मन वश में नहीं आता तो इसे वश में लाने का उपाय सुनो! मन चञ्चल बहुत होता है, परन्तु वह बनता भोजन से। अपना भोजन शुद्ध कर लो, मन वश में हो जायेगा। देखो कि तुम बहुत अधिक लाल मिर्च तो नहीं खाते? बहुत अधिक उत्तेजक पदार्थ तो नहीं खाते? ऐसे करते हो तो छोड़ दो उसे। यह सबसे पहला साधन है–आहारशुद्धि।

आर्य समाज और युवा पीढ़ी

● डॉ. महेश विद्यालंकार

आर्य समाज वैचारिक सुधारवादी चिन्तन और आन्दोलन रहा है। इसके आरम्भिक काल में जो निर्माण, सुधार, परिवर्तन और नवचेतना आई, वह ऐतिहासिक, स्वर्णिम व स्मरणीय है। आर्यसमाज आग, आंधी और तूफान की तरह आगे बढ़ता गया। जो भी इसके सम्पर्क में आया, उस पर विचारों सिद्धान्तों व आदर्शों की अमिट छाप पड़ती गयी इसी कारण आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए हजारों जनून वाले, दीवाने लोगों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। श्रृषिवर का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इतना चुम्बकीय, अद्वितीय, प्रेरक और दिव्य भव्य था, जिसने भी उन्हें देखा, सुना, एवं पढ़ा वही उनका दीवाना हो गया। इतिहास साक्षी है– आर्यसमाज का अतीत अत्यन्त गौरवशाली, प्रेरक, नवचेतना तथा स्फूर्ति से भरा रहा है।

प्रत्येक क्षेत्र में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुए हैं। इस परिवर्तन की धारा का आर्य समाज के संगठनों, सभाओं, संस्थाओं और लोगों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। समर्पित सेवाभावी, सिद्धान्तवादी वृती संन्यासी, विद्वान अधिकारी कार्यकर्ता आदि विदा होते गए, नये अधिक संख्या में बने नहीं, परिणाम–रिक्तता आ गई। सभा, संगठनों संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों आदि का भौतिक कलेवर तो बढ़ा, मगर मूल चेतना मिशनरी स्प्रिट, विचार, सिद्धान्त, आदर्श आदि सिकुड़ते गए। इसी कारण आज आर्य समाज संकट के दौर से निकल रहा है। किसी संगठन की आत्मा, व्यक्ति, एकता, अनुशासन सिद्धान्त तथा विचार होते हैं। जब इन बातों का क्षरण होता है तब विवाद संघर्ष, मतभेद, गुटबाजी आदि हावी हो जाते हैं।

आज आर्यसमाज को सेवाभावी, ईमानदार व मिशनरी भाव भावना वाली युवापीढ़ी की तुरन्त व अधिक जरूरत है। जो आर्य समाज को गति एवं प्रगति दे सके। आर्य समाज को वैदिक विचारधारा के युवक निम्नबातों से प्राप्त होंगे। 1. गुरूकुल 2. आर्य वीर दल 3. डी.ए.वी. 4 आर्य परिवार गुरूकुल आर्य समाज के टकसाल, पौधघर और फाउन्ड्री हैं, जहां बच्चों को वैदिक संस्कृति संस्कार, सभ्यता जीवनमूल्य आदि से संस्कारित किया जाता है। बाल्यकाल से ही दिनचर्या, रहन–सहन, खान–पान, मिशनरी भावना आदि भरी जाती है। आज आर्यसमाज में विद्वान्, वक्ता, पुरोहित, उपदेशक, लेखक आदि हैं और आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में लगे हैं, वे सभी किसी न किसी गुरूकुल के पढ़े हुए हैं, तभी भावना से कार्य कर रहे हैं। आज गुरूकुलों को महत्व, संरक्षण, सहयोग और सम्मान देने की आवश्यकता है। गुरूकुलों से ही आर्यसमाज आगे बढ़ेगा। सभाएं संगठन व धनी मानी लोग प्रत्येक प्रान्त व जिलों में सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण ढ़ंग से गुरूकुलों को चलायें। गुरूकुल भी आर्यसमाज के लिए सेवाभावी तपस्वी, त्यागी और मिशनरी भावना वाले विद्वान वक्ता, उपदेशक, पुरोहित, भजनोपदेशक, कर्मठ कार्यकर्त्ता आदि तैयार करें। गुरूकुलों को भी घिसा प्रढा ढर्रा व ढ़ंग तरीका बदलना चाहिए। आधुनिकता और प्राचीनता का समन्वय आज के गुरूकुलों की सबसे बड़ी जरूरत है। जीवन व जगत की प्रासंगिकता, उपयोगिता तथा व्यवहारिकता गुरूकुलों में आनी चाहिए। आज का युग वैदिक व वैज्ञानिक है। कम्प्यूटर, लेपटाप, इन्टरनेट, मोबाइल आदि युग की मांग है। इस विचारधारा का भी गुरूकुल के बच्चों को ज्ञान तथा उपयोग मिलना चाहिए। गुरूकुल के विद्यार्थी की पहचान, योग आध्यात्म, नैतिक व जीवन मूल्यों से है। इन्हीं मूल्यों को देखकर लोग हमसे जुड़ेगे। आज गुरूकुलों में भी भूल में भूल हो रही है। जो गुरूकुलों में निर्माण होना चाहिए, वैसा प्रायः नहीं हो पा रहा है। गुरूकुलों को सही दिशा, में सेवाभाव एवं ईमानदारी से चलाना हम सब आर्यों का परमधर्म है, यहीं से हमें वैदिक मिशनरी व संस्कारित बच्चे–युवक मिलेंगे। जो जीवन भर आर्य समाज के काम आयेंगे।

आर्य वीर दल आर्य समाज की वह शाखा और प्रयोगशाला है– जहां बच्चों तथा युवकों को खेल–कूद, मनोरंजन आदि वैदिक विचारों और मिशनरी भावना की शिक्षा, दीक्षा दी जाती है। संगठन, एकता व भारत –भारतीयता के संस्कार दिए जाते हैं। बचपन के संस्कार आगे चलकर फलते–फूलते हैं। आर्यवीर दल, आर्यसमाज की युवा विग्रेड् कहलाती है। पहले समाजों, सभा, संगठनों आदि में आर्य वीर दल का विशेष–स्थान सम्मान तथा महत्व होता था। आज इस ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में आधुनिक साधन–सुविधाओं से युक्त होकर आर्य समाज को युवावर्ग को अपने साथ जोड़ने के लिए ठोस कार्यक्रम व कदम उठाने होगे। अपने पुराने ढर्रे को बदलना होगा, किराये के और 57 दिनों के आर्य वीरों से आर्य समाज का हित नहीं होने वाला है। बच्चों को जोड़ने के लिए उनके साथ–सम्बन्ध सम्पर्क, सहयोग और संस्कार बनाने होंगे। उन पर खर्च करना होगा। उनके नाम पर धन तो एकत्र कर लेते हैं, मगर ईमानदारी से उन पर खर्च नहीं करते। कुछ समय के बाद बच्चे हम से कट जाते हैं। कुछ स्थानों पर आर्य वीर दल शाखाओं के माध्यम से बच्चों को ट्रेनिंग दी जा रही है। सार्थक व प्रेरक परिणाम भी आ रहे है। किसी संस्था और संगठन की ऊर्जा व धड़कन युवाशक्ति होती है। उनके पास करने–कराने का जोश होता है। परिवर्तन युवा शक्ति ही करती है। आर्यसमाज को मजबूत करने और आगे बढ़ाने में आर्य वीर दल की सार्थक भूमिका रही है। आर्य वीर दल से सहयोगी तथा सेवा भावी कार्यकर्त्ता और रक्षक मिलेंगे। युवा शक्ति से ही जो आर्य के भक्षक बन रहे है। उन्हें रोकेंगी और भगायेंगे। सभी आर्यों का कर्त्तव्य है कि आर्य वीर दल को स्थापित करो, उसे सींचो और आगे बढ़ाओ। इन्हीं युवकों से आर्य समाज के आगे बढ़ेगा। आर्य वीरों का सम्मान व प्रोत्साहन करो आर्य समाज का अंग डी.ए.वी. परिवार है। जिसका योगदान और विस्तार पूरे देश में फैला हुआ है। जिसके पास लाखों विद्यार्थी, हजारों अध्यापक तथा कर्मचारी है। शिक्षा परिवर्तन का सशक्त माध्यम होती है। डी.ए.वी. में धर्मशिक्षा, नैतिक शिक्षा तथा भारतीय जीवन मूल्यों को प्रचारित करने की परम्परा रही है। डी.ए.वी. ने यह प्रेरक व महत्वपूर्ण विचार किया है कि बच्चों को आर्य विचार धारा में जोड़ने के लिए स्कूलों, कॉलेजों में युवा समाज बनाया जाय। विद्यार्थियों का वर्तमान के सन्दर्भों में आर्य जीवन मूल्यों से शिक्षित किया जाए। डी.ए.वी. का युवकों को प्रेरित तथा आकर्षित करने का प्रशंसनीय व अनुकरणीय कदम है। डी.ए.वी. परिवार में आर्य विचार धारा को प्रचारित व प्रसारित करने की अनेक संभावनाएं हैं। इस दिशा में डी.ए.वी. धर्मशिक्षकों, वैदिक चेतना, सेमीनार, वर्कशाप, यज्ञ सत्संग आदि के माध्यम से प्रेरक कार्य कर रहा है। बच्चों में संस्कार दिए जा रहे हैं। आर्यसमाज को डी.ए.वी. से युवा शक्ति मिलेगी। युवाशक्ति के निर्माण में डी.ए.वी. आर्य समाज बहुत बड़ा आधार है।

आर्य परिवार आर्य समाज की नींव हैं, जहां आर्य विचार धारा बनती, दृढ़ होती और फैलती है। आर्य परिवारों की युवक–युवतियों, बहुओं, बेटियों और बच्चों को जोड़ने प्रेरित करने, संभालने तथा संस्कारित करने की बड़ी जरूरत है। कहते हैं पेड़ की छाया और मनुष्य की माया साथ चली जाती है। देखा ये गया है कि व्यक्ति आर्य समाज रहता है बाद को कोई नाम भी नहीं लेता। आर्य परिवारों के बच्चे आर्य विचारधारा से क्यों नहीं जुड़ पा रहे हैं? इसका ईमानदारी से कारण व निवारण सोचना होगा। बच्चे भाषण नहीं सुनते आचरण देखते हैं? बच्चों को सेवा के प्रकल्पों, से जोड़ो। उन्हें अधिकार सम्मान और जिम्मेदारी दो। वे अच्छा करके दिखायेंगे। जब वे हमें धर्म स्थानों पर लड़ते, झगड़ते देखते हैं तो तटस्थ, उपराम और विचार धारा से मुँह फेर लेते हैं। बच्चों को घर और धर्मस्थलों, संगठनों व सभाओं में सात्विक धार्मिक, भक्तिपूर्ण शान्त वातावरण दो। आज की युवा पीढ़ी शान्ति और सत्य की खोज व प्राप्ति में भटक रही है। आर्य समाज के सत्संग, कार्यक्रम, उत्सव महासम्मेलन आदि धार्मिक, आध्यात्मिक, प्रेरक व अनुकरणीय सन्देश नहीं दे पा रहे है। इस कारण भी युवा पीढ़ी हम से हट व कर रही है।

आज युग प्रचार, विज्ञापन व मीडिया का है। इस दिशा में भी आर्य समाज पिछड़ रहा है। विचार, सिद्धान्त तथा आदर्श तो अच्छे हैं, मगर बुलाते दिखते, व बताते नहीं हैं कौन आयेगा? युवा पीढ़ी को जोड़ने का प्रचार तन्त्र मजबूत साधन है। साहित्य विचार परिवर्तन का महत्वपूर्ण शक्ति है। आर्य समाज की युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिए प्रेरक उज्ज्वल तथा उद्देश्यपूर्ण साहित्य विभिन्न भाषाओं में सस्ता पहुंचाना चाहिए। आर्यों, नई दुनियां नहीं मिलनी है, इसी में से अच्छा निकालना, करना और आगे बढ़ाना है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो।

संस्कृति एवम् संस्कार

● पं० वेदप्रकाश शास्त्री

गौरवमयी है संस्कृति हमारी, पहचानो गौरवमय इतिहास को। कुसंस्कारों को मिटा डालो, भगा दो अन्धविश्वास को।। सोचो, डूब गया संस्कृति का बेड़ा, तो फिर भारत का क्या होगा।

भारतीय सभ्यता संस्कृति में संस्कारों का सर्वोच्च स्थान है। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके उत्तम संस्कारों से ही होती है और संस्कारों का शुभारम्भ घर–परिवार से होता है। घरेलू कार्यों में परस्पर सहयोग, सद्व्यवहार, सम्मान संस्कार ही सिखाते हैं और विद्यालय उस नींव को सुदृढ़ करते हैं। कुछ बुनियादी संस्कार यथा–सच्चाई, ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता, सद्भावना, परोपकार, माधुर्य, सेवा भाव, सम्भाषण, विनम्रता, सहृदयता, दया, राष्ट्रप्रेम, सरलता, शिष्टाचार आदि सद्गुणों से व्यक्ति महान् बनता है।

बच्चों में एतादृश शुभ संस्कार जागृत करने का उत्तरदायित्व घर में माता–पिता, सम्बन्धी–गण तथा विद्यालय में शिक्षकों का है। परन्तु पाश्चात्य शिक्षा पद्धति, टी. वी, मोबाइल, इण्टरनेट आदि संचार माध्यमों ने सुस्कारों पर पानी फेर दिया है। अब तो उच्श्रंखलता, उद्दण्डता, स्वच्छन्दता, अनुशासनहीनता, आर्थिक सुदृढ़ता आदि ने अपना अधिपत्य जमा लिया है, जिसके कारण सच्चरित्र तथा नैतिक मूल्यों में गिरावट आ गई है। मानवता दानवता की ओर अग्रसर है। असहिष्णुता ने अपने पैर पूर्णतः पसार लिए हैं। तभी तो कोई भी घटना घटित होने पर उसकी असलियत जाने बिना तोड़फोड़ शुरू हो जाती है, बाजार बन्द करवा दिए जाते हैं, चक्का जाम हो जाता है। करोड़ों का नुकसान हो जाने के बारे में कौन सोचता है?

संयुक्त परिवार विश्रृंखलित हो रहे हैं। बेटों के होते हुए भी माता–पिता निराश्रित हो रहे हैं अथवा होने के कागार पर हैं। इन विषम परिस्थितियों में सतत् वृद्धि चिन्त्य है।

आधुनिक राजकीय शैक्षणिक पाठ्यक्रम में सुसंस्कार, नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा का अभाव है। पाठ्यक्रम पढ़ाने के अतिरिक्त शिक्षक भी क्या करे?

आइए, इस समस्या के समाधान के लिए सोचें, समझें और प्रयत्न करें।

व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की,
संस्कारों से बनती है,
दृढ़ से दृढ़तर बुनियाद।
घर–विद्यालय–समाज के प्रति शिष्टता का ज्ञान,
हैं संस्कार बनाते एक अलग पहचान।
आदर, सेवा, मृदुभाषिता और सद्भाव–
कराते हैं अपने उत्तरदायित्व का बोध,
इन्हीं संस्कारों से बालमन में आयगा सुबोध।
बच्चों को यह ईमानदारी का मूल्य सिखाते,
संस्कार ही पूरे जीवन की इमारत बनाते,
संस्कार ही है। अतिथ्य सत्कार बताते।
करें बड़ों का चरण स्पर्श और आदर सम्मान,
अर्पण करें तन–मन–धन, गएं देश का गौरवगान।
परिवार और विद्यालय का हाथ पकड़कर,स्पर्धा में निकल जाते, दूसरों से आगे बढ़कर।
बदलते हैं हमारी सोच और नित्य बढ़ाते विज्ञान।
हम सबकी जिम्मेदारी है, रखें बाल संस्कारों का ध्यान।।

शास्त्री भवन, 4–इ, कैलाश नगर, फाजिल्का, पंजाब

बालतरु और बूढ़ा प्रजापति

● डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

बालतरु अपने ही विचारों में खोया हुआ था कि आकाश में एक अल्हड़ बादल उसे चिढ़ाता हुआ उड़ गया। उसने निगाहें नीचे की, मनचली नदी भी उसके प्रति उपेक्षा भाव प्रकट करती हुई दौड़ गई। इस उपेक्षा भाव से आहत बालतरु की आँखों में आँसू तैरने लगे। वह जोर–जोर से सिसकने लगा। उसकी सिसकियों को सुनकर उसके पिता बूढ़े प्रजापति प्रकट हुए। उन्होंने बालतरु को गोद में लेकर बड़े प्यार से पूछा ''बेटे क्यों रो रहे हो?''

बालतरु ने सिसकियाँ लेते हुए कहा, ''पितृवर, आपने मेरे पैरों को जमीन से क्यों बाँधा हुआ है? मैं चल नहीं सकता, , उड़ नहीं सकता और लेट भी नहीं सकता। मेरा बड़ा भाई बादल मुझे चिढ़ाता हुआ आकाश में उड़ान भरता है, मेरी छोटी बहिन नदी मेरी अनदेखी करके समुद्र की ओर दौड़ जाती है और मैं हाथ पसारे आकाश की ओर ताकता रह जाता हूँ। यह मेरे किन कर्मों की सज़ा है?''

बूढ़े प्रजापति ने उसके गालों को प्यार से थपथपाते हुए कहा, 'बेटा, तेरे दोनों–भाई बहिन शरारती हैं , कहीं पल भर टिकते ही नहीं। इसलिए मैं इनको दूर ही रखता हूँ। लोग भी इन्हें फटकार लगाते हें। ये जो सिरफरा बादल है न, कई बार तो यह केवल गरजता है, बरसता नहीं। यदि बरसता भी है तो कई बार घरों में तबाही कर देता है और ये जो नकचढ़ी नदी है। यह या तो सूखी पड़ी रहेगी और फिर बहेगी तो कभी–कभी मकानों दुकानों को भी बहा कर ले जाती है। पर तुम तो ऐसा नहीं करते।

''फिर भी आपने मुझे इतनी बड़ी सज़ा दी हुई है। ''बालतरु ने रूठते हुए कहा। जिसको तुम सज़ा कहते हो उसे मैं वरदान मानता हूँ। तुमने देखा होगा कि जंगलों में शिकारी भागते फिरते हैं या आकाश में पक्षी उडते हैं, परन्तु उन्हें कोई आदर की दृष्टि से नहीं देखता है, परन्तु इसके विपरीत ऋषि–मुनि लोग एक ही स्थान पर टिक कर साधना करते हैं, लोक मंगल के कार्य करते हैं, इसलिए सभी लोग उनके सम्मुख नत मस्तक होते हैं।'

''आप मुझे झूठी तसल्ली दे रहे हैं।'' बालतरु ने आँखें पोंछते हुए कहा। ''मुझे गलत मत समझो। तुम तो मेरे बुढ़ापे के सहारे हो। आकाश में उछल–कूद मचाने वाला तथा जमीन पर भाग–दौड़ कर शोर मचाने वाली नदी क्या बुढापे में मुझे सहारा दे पायेंगे? जीवन के अन्तिम क्षणों में तुम मेरी देख–भाल कर सको, इसलिए मैंने अपने स्वार्थ के लिए जमीन से तुम्हारे पैर बाँध दिए हैं। कल्पना करो, यदि तुम उड़ते फिरते या दौढ़ लगाते तो मैं लाठी टेकते हुए तुम्हें कहाँ ढूँढता फिरता।''

''तो आपने अपना ही भला सोचा, मेरे सुख–दु:ख की चिन्ता नहीं की।'' इस बार बालतरु के शब्दों में कुछ कठोरता थी।

''नहीं वत्स, इस बार भी तुम मुझे गलत समझ रहे हो। मैंने अपना ही भला नहीं अपितु पूरे विश्व का भला सोचा है। तुम ही तो अपने सबल कंधों में हजारों–लाखों फल लाद कर प्राणिमात्र का भरण–पोषण करते हो, यदि तुम भी बादल और नदी की तरह चलायमान रहते तो मेरी प्रजा भूखी मर जाती। मुझ पर भी अपनी प्रजा को भूखा मारने का दोष लगता, इसलिए मैने तम्हारे पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं। बूढ़े प्रजापति की आँखे गीली हो गई।

'' इन्हीं बेडियों ने मेरी खुशियाँ छीन ली हैं।'' बालतरु ने प्रजापति से आँखें झुका कर कहा।

'' सुनो पुत्र, जिन बेड़ियों में तम्हें पीड़ा दिखाई दे रही है उन्हीं बेड़ियों में प्राणिमात्र की खुशियाँ छिपी हुई हैं। इस पर भी यदि तुम्हें यह लगता है कि तम्हारे साथ अन्याय हुआ है तो मैं तुम्हें भी बादल और नदी के समान मुक्त कर सकता हूँ। बोलो क्या चाहते हो तुम?'' बालतरु सिर झुकाये एक शब्द भी नहीं बोल सका।

फिर बूढ़े प्रजापति ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा– ''जब तुम्हारे पत्ते हिलते हैं तो लोगों को ऐसा लगता है कि मानो तुम हाथ हिलाकर उनका स्वागत कर रहे हो। जब तुम अपने कन्धों पर असंख्य फल लादकर खड़े हो जाते हो तो प्राणिमात्र को ऐसा लगता है कि असंख्य प्राणियों की भूख को शान्त करने के लिए कोई स्वर्ग का देव पुरुष प्रकट हो गया है। फिर प्रसन्न होकर कोयल गाने लगती है, भौंरे गुनगुनाने लगते हैं। तथा तितलियों स्वार्णिम पंखों से डाल–डाल पर चहलकदमी करने लगती है।''

बालतरु के चेहरे पर पहली बार हल्की सी प्रसन्नता की किस झलकने लगी। उसने आश्चर्य से बूढ़े प्रजापति की अंगुली पकड़ कर पूछा– ''क्या आप सच कह रहे हैं?''

'तो क्या मैं तुमसे झूठ बोलूँगा। हमारे शास्त्रों में उपदेश देने वाले साधु–संतों की चर्चा हुई है परन्तु तुम इस धरा के मौन संत हो। बल्कि उनसे भी बढ़कर हो, जो बोले विना, मौन साधक के समान, अहंकार भाव से मुक्त होकर, तूफानों को झेलते हुए, सर्दी–गर्मी, बरसात में एक पैर पर खड़े होकर, हाथ हिलाते हुए असंख्य मधुर फलों को लुटाये जाते हो।'

''अब आप मेरी प्रशंसा में जुट गए हैं'' बालतरू ने हल्का सा मुस्कराते हुए तथा प्रजापति के होठों का स्पर्श करते हुए कहा।

''तुम चाहे इसे प्रशंसा कहो या और कुछ परन्तु तुम मुझे सत्य बोलने से नहीं रोक सकते। जब तक तुम जीवित रहते हो, प्राणियों के प्राण दाना बनकर रहते हो और जब सूख जाते हो या मर जाते हो तो तब भी खिड़कियों, दरवाजों, झरोखों, आलमारियों आदि के रूप में कट–छंट कर या सज–संवर अपने काटने वाले के भवनों के कवच बन कर उनकी रक्षा करते हो। जब वही आदमी जाड़े में काँपने लगता है या भूख में तड़पने लगता है तो तुम ही ईंधन बनकर उसे नया जीवन प्रदान करते हो।

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

यश में वश - कि - वश में यश

● देवनारायण भारद्वाज

लोकव्यवहार में 'यश' एवं 'वश' शब्दों का प्रयोग प्रायः होता रहता है। इन शब्दों के बड़े सीधे-सादे अर्थ हैं। 'यश' - अर्थात् कीर्ति, ख्याति, प्रशंसा आदि। 'वश' एक का दूसरे पर प्रभाव, नियंत्रण या भारी पड़ जाने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। पता चला कि 'यश' प्रसिद्धि है और 'वश' शक्ति-समृद्धि है। इन शब्दों के अग्रिम प्रवाह को रोकते हुए, पूज्य राष्ट्रपिता बापू जी एवं जय जवान जय किसान के घोषकर्ता राष्ट्रपुत्र शास्त्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर लेते हैं, क्योंकि आज दो अक्टूबर के पावन दिवस पर यह लेखनी चल पड़ी है। आज का अखबार भी सामने पड़ा है, और कह रहा है कि आप मेरी उपेक्षा करके आगे नहीं बढ़ सकते हैं, क्या आप मेरे मुख पृष्ठ को भी नहीं पढ़ सकते हैं। पढते ही मन मलीन होकर ग्लानि से भर गया। पहला ही समाचार क्या दुराचार निकला-'बलात्कार के प्रयास में आई.ए.एस. को जेल।' नामरूप दोनों से सुशील दिखने वाले, कई जनपदों में जिलाधीश रह चुके राज्याधिकारी ने चलती ट्रेन में युवती के साथ निन्दनीय हरकत की। पहले उसने पद-प्रतिष्ठा के बल पर युवती को वश में लेने की कुचेष्ठा की, सहयात्रियों एवं युवती के माँ के संघर्ष के आगे जब उसकी एक न चली, तो पैरों में गिरकर क्षमा याचना पर आ गया। सतर्क रेलवे मजिस्ट्रेट के सामने उसकी तथा उसके सहअधिकारियों की अनुसुनी हुई। वह जेल तो गया ही युवा मुख्यमंत्री माननीय अखिलेश जी ने उनसे पद से निलम्बित कर दिया। एस.टी.एस.टी. एक्ट के सहारे से उनके पूर्व उच्चाधिकारी पिता जमानत भी करवा लेंगे। आगे वे पद स्थापित भी हो सकते हैं, पर तत्काल जो उदाहरण बना- वह 'वश' या शारीरिक शक्ति का उदाहरण है। इसी के ठीक बगल में एक दूसरा समाचार-दुराचार की पराकाष्ठा है-"एक युवा एवं दूसरे अधेड़ साथी श्रमिक द्वारा-एक ढ़ाई वर्ष की कन्या के साथ बलात्कार दूसरे से प्रयास।" जनसमूह ने सामूहिक पिटाई के बाद इन्हें भी जेल की हवा खिला दी। महिलाओं ने ऐसे दुराचारों की जननी शराब की उस दुकान को बन्द कराने के लिए प्रदर्शन किया, जिसके खुल जाने से हँसता-खेलता ग्राम रोने बिलखने के लिए बाध्य हो गया।

इन समाचारों की वेदना से लेखनी तो थम गयी, किन्तु आँखें चल पड़ी और ग्यारहवें पृष्ठ पर पहुँच गयी। आहत भावना को राहत की श्वाँस मिली और लेखनी फिर चल पड़ी। समाचार क्या परिष्कार निकला- "उ.प्र. के किसान की आधुनिक तकनीक जायेगी विदेश" जनपद बारांबाकी के दौलतपुर गांव के किसान रामशरण वर्मा ने अपने तकनीकी शोध-प्रयोगों द्वारा फलों की खेती में क्रान्तिकारी परिवर्द्धन किया। अमेरिका, चीन, जाम्बिया, इराक, जॉर्डन, घाना, केन्या, लेबनान, लीबिया, ओमान, इजरायल, मिश्र व सिंगापुर के अधिकारियों एवं कृषि वैज्ञानिकों ने ग्राम में जाकर न केवल उनके खेतों का दृश्य-दर्शन ही किया, प्रत्युत किसान को अपने देश में मार्ग-दर्शन हेतु आमन्त्रित भी किया। मात्र छः एकड़ भूमि पर इस नवाचारी प्रयोग ने साधारण किसान के 'यश' को देश-देशान्तर में विश्वव्यापी कर दिया। जब तक भारतवर्ष की माताओं ने भोरी-भोरी लोरी अपनी संतानों की घुट्टी में घोरी, तब तक वे संस्कारों के सोपान-दर-सोपान चढ़ती-दुराचरण से बचती रहीं, और अपनी क्षमताओं के बल पर अपने परिवार-स्वदेश का विश्व में 'यश' उज्जवल करती रही। भारत माता के हाथ की वेदवीणा को दर किनार कर हमने मान-मनीषानाशिनी, पटक-पटक कर पीटने वाली दूरदर्शन की पिटारी शौतन महतारी को घर में घुसा लिया। जिसने संस्कारों को तिरस्कार करते हुए वीभत्स विकारों का बाजार हमारे घर में सजा दिया। आइए वेदवीणा की मधुर वाणी को सुनिये-

यशा यासि प्रदिशो दिशश्च यशा पशुनामुत चर्षणीनाम्।
यशाः पृथिव्या अदित्या उपस्थे ऽहं भूयासं सवितेव चारुः।।

अथर्ववेद (13.1.38) का भावार्थ है- हे परमेश्वर! तू व तेरे द्वारा प्रदत्त गुण-कर्मानुसार फलीभूत यश दिशा-दिशान्तर में चलकर पहुँचता रहता है। पशुओं एवं मनुष्यों सभी में, यही सद्गुण स्वरूप तेरा यश उन्हें दूर-दूर तक मान्यता, देकर ईश्वर विस्तृत कर देता हैं। पृथ्वी माता व अदिति वेदमाता की गोद में रहते हुए तेरे प्रेरक गुणों के साथ मैं शूरवीर-सूरज के समान शोभायमान यशस्वी हो जाऊँ। वेद की हर प्रार्थना की आत्मा पुरुषार्थ होती है। वेदमाता हमारे कृतित्व का पुरस्कार हमें प्रदान करती है जिसे यश कहते हैं। यह पशुओं व मनुष्यों सबको मिलता है। चूँकि पशुओं का ज्ञान-स्वाभाविक बँधा हुआ होता है, इसलिए उनमें अनेक व्यवधान होते हुए-उनका एक ही गुणधान उनके जीवन यापन के लिये पर्याप्त हो सकता है, किन्तु मनुष्यों का ज्ञान-नैमित्तिक एवं स्वतंत्र होता है, वे पुरुषार्थ के द्वारा अपना विस्तार व चमक किसी भी ऊँचाई तक उठा सकते हैं अथवा प्रमाद से गर्त में गिरा सकते हैं। धरती की धैर्यशीलसत्ता एवं अदिति की अखण्डनीय ज्ञान-शक्तिमत्ता कीर्ति-प्रतिष्ठा की अभिनन्दनीय ऊँचाई प्रदान करते हैं। गाय-घोड़ा, तोता, काक, कोयल, कुत्ता, कुकुरमत्ता, जड़, तना, फूल-पत्ता सभी में यत्किचिंत होते हुए भी कोई न कोई विशेष गुण अवश्य होता है, जो उन्हें यश प्रदान करता है, जिसके कारण समाज उनका पालन पोषण एवं उपयोग करता है। संस्कृत का एक उदाहरण दृष्टव्य है :-

वक्रोऽपि पंक जनितोऽपि दुरासदोऽपि व्यालाश्रितोऽपि विफलोऽपि सकण्टकोऽपि। गन्धेन बंधुरसि केतक पुष्पजनेन ह्यको गुणः खलु निहन्ति समस्त दोषान्।।

अर्थात् टेड़ा होने पर भी, कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी, दुष्प्राप्त होने पर भी सर्पो द्वारा लिपटा होने पर भी, फलहीन होने पर भी, काँटेदार होने पर भी, केतकी! पुष्पज सुगन्ध के कारण तुम सबके बन्धु हो गये हों। ठीक ही है एक बड़ा गुण सब अवगुणों का नाश कर देता है। वनस्पति या पशु जगत से हटकर मनुष्य जगत की यश व वश की विवेचना बड़ी लोहमर्षक है। चौपाल पर आकर एक व्यक्ति ने चर्चा की - "पता है परसों एक आदमी सीढ़ी से गिर पड़ा, सभी हँसने लगे। केवल मैं नहीं हँसा। लोगों ने पूछा-भला तुम क्यों नहीं हँसे? क्योंकि गिरने वाला वह आदमी मैं ही था। "करत-करत अभ्यास से जड़मत होत सुजान" लोकोक्ति के अनुसार-वैज्ञानिक आइंस्टाइन का उदाहरण रोचक है।वे बचपन में साधारण बुद्धि के थे। बोलना देर में शुरू किया। विद्यालय में भी साधारण स्तर के छात्र रहे। प्रवेश परीक्षा भी उत्तीर्ण न करे सके। अभ्यास से यही साधारण बुद्धि बालक नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता महान यशस्वी वैज्ञानिक बना। अत्यन्त निर्धन परिवार में जन्में एडीसन की कहानी भी अनवरत अभ्यास एवं श्रम के बल पर यश के आकाश को छूने की कहानी है। बचपन में इन्हें भी पढ़ाई में दुर्बल होने के कारण मन्दबुद्धि घोषित कर दिया गया था। बाद में इन्होंने ही बल्ब, ग्रामोफोन, मूवी प्रोजेक्टर, माइक्रोफोन, कार्बन टेलिफोन, ट्रांसमीटर, वोट रिकार्डर और प्रिन्टिंग टेलीग्राम सहित सहस्राधिक आविष्कार किये। बचपन का यही मन्धबुद्धि बालक थॉमस अल्वा एडीसन विज्ञान का महानतम यशस्वी व्यक्तित्व बनकर प्रतिष्ठित हुआ।

'यश' और 'वश' का वाद-विवाद संवाद असीम है। देवनागरी वर्णमाला से इनका दिग्दर्शन सुगमता से कर सकते हैं। यश लब्धि का एक सुनिश्चित सोपान है। यथा- य-र-ल-व-श=यश अर्थात् य=यजन, र=रमन, ल=लगन, व=वरण, श=शमन। इन पाँच पायदानों पर सवार होकर व्यक्ति (य+श) को प्राप्त करता है। इन पायदानों को इन सरल शब्दों से ही समझ लीजिये, व्याख्या के लिए तो पृथक निबन्ध चाहिए। यश प्राप्ति की यही जनपथ है। प्रारंभ के तीन पायदान (य+र+श) की उपेक्षा करके वश (व+श) के दुर्जन पथ पर पहुँच जाता है। उसमें यजन, रमन, लगन की वृत्ति न होकर उसे वहीं चयन रह जाता है जिससे मन की शमन हो। खान-पान, रहन-सहन सभी में से यजन हटकर व्यसन समा जाते है तब यही 'वश' मानव को वरण की विपरीतगामी दिशा की ओर मोड़ देता है। वह बन जाता है शव (श+व) अर्थात् मृतक। ऊपर चढ़ने के लिए के लिए कई पायदानों का व्यायाम करना पड़ता है- गिरने पर व्यक्ति बिना किसी श्रम के नीचे धड़ाम हो जाता है। मन की मौज तो होती है किन्तु शमन न होने से आत्मिक शान्ति नहीं मिल पाती है। यश तो अपने आप में वश (बल) को समेटे रहता है जबकि केवल यश (बल) में से यश तिरोहित हो जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है-

प्रतिष्ठा की उतिष्ठा भी पल भर का उजासा है।
जिस साख पर पहुँचे हो वह कभी टूट भी सकती है।।

ऊपर व्यक्त यश शरीर के शुभकर्मों की सुगन्धि व्यक्ति को देश-देशान्तर तक पहुँचाकर अमर कर देती है। इसके विपरीत शव (मृतक) बन गये विवश व्यक्ति के दुष्कर्मों की दुगन्धि ऐसी फैलती है कि जिसे कफन, दफन, प्रज्वलन ने किसी भाँति समाप्त नहीं किया जा सकता है। राम-रावण की कहानी इसी तथ्य को स्थापित करती है। इसलिये हमें केवल वश के भरोसे यश को अपने वश में करना चाहिये।

-वरेण्यम् अवन्तिको (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

गाँधी से गफ्फार खाँ तक

● डॉ. सहदेव वर्मा

एक समय था जब पाकिस्तान के जनक मि. जिन्ना ने म. गाँधी के खिलाफ़त आन्दोलन का पं. मालवीय जी आदि के साथ मिलकर राष्ट्र विरोधी होने के कारण उसका ज़ोरदार विरोध किया था। यह भी तथ्य है कि मोहम्मद इक़बाल ने भारत को सारे जहाँ से अच्छा और अमिट हस्ती कहा था। और वह समय भी आया जब ये दोनों ही व्यक्ति भारत–विभाजन के प्रबल पक्षधर बन गये।

सन् 1940 में जब मि. जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने मजहब के नाम पर अलग मुल्क की माँग की तो गाँधी जी ने एक पत्र लिखकर जिन्ना को चेताया, 'मजहब के नाम पर और कौन से तत्त्व हैं जो भारतीय मुसलमानों को अन्य भारतीयों से अलग करते हैं? मैं समझता हूँ कि इस प्रस्ताव से समूचे भारत को विनाश के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा। मैं जानता हूँ कि आपको मुसलमान समुदाय का विश्वास प्राप्त है, कृपया इसका उपयोग उनके हितों के लिये करें।

इसके उत्तर में जिन्ना ने लिखा– 'हमारा मानना है कि मुसलमान और हिन्दू देश की दो भिन्न कौम हैं। हमारी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास, भाषा सब कुछ अलग है। इसलिए हमें अलग मुल्क चाहिए।' आगे चलकर (कारण कुछ भी हों) गांधी जी भी पाकिस्तान के समर्थक बने, और कांग्रेस के नेताओं को भी इस अत्यन्त दुःखदायी, अस्वाभाविक और कायरतापूर्ण योजना को स्वीकार करने के लिए सहमत कर लिया।

कहते हैं कि अब्राहिम लिंकन तत्कालीन (अमेरिकन) प्रेसिडैन्ट के शासन काल में वहाँ भी कुछ ऐसी ही अलगाववादी आवाज उभरी थी, कि या तो देश का बंटवारा करो अथवा गृह युद्ध के लिये तैयार रहो। तत्कालीन अमेरिकन नेतृत्व तथा अधिकांश जनता ने इस भयानक चुनौती को स्वीकार किया। परिणाम सबके सामने है, न तो वहाँ गृह युद्ध छिड़ा और न विभाजन हुआ। यह सर्व परिचित तथ्य है कि अनेक जातियों, प्रदेशों, भाषाओं तथा विचारधाराओं के रहते हुए भी (अमेरिका आज) न केवल एक संयुक्त, सबल राष्ट्र है, अपितु विश्व का सर्वाधिक सम्पन्न एवं प्रभावशाली राष्ट्र भी है। स्पष्ट है कि वहाँ के नेताओं की रगों में पानी नहीं, खून प्रवाहित था। वे गद्दी के लिए अधीर और पद लोलुप न होकर किसी भी कीमत पर राष्ट्र एकता के लिए कृत संकल्प और पक्षधर थे।

इतिहास साक्षी है, कि चाहे कितने ही तर्क और सफ़ाई क्यों न दी जाय, भारत के तत्कालीन नेताओं की ढुलमुल, नीति, और सर्वथा दुर्बल इच्छा शक्ति के कारण वह सब कुछ हुआ, जो नहीं होना चाहिए था। गाँधी जी जैसे अनुभवी और तपस्वी नेता की यह 'घोषणा भी धरी रह गई कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा।' कारण चाहे कुछ भी हो, अन्ततोगत्त्वा नेतृत्व की घुटनाटेक और महत्त्वाकांक्षी नीति के कारण देश–विभाज़न की अनुचित, अव्यावहारिक तथा अस्वाभाविक माँग मानकर अपनी 'ईगो' की पूर्ति के साथ भारत का नाम विश्व के स्वतंत्र–राष्ट्रों में लिखा गया और–खण्डित भारत के लिए अखण्ड भारत का नारा भारतीय जनता की झोली में डाल दिया गया। राष्ट्रीय ध्वज से स्वातन्त्र्य–प्रिय चरखे को हटाकर, उसमें चक्र की स्थापना की गई। अरिमर्दन सुदर्शन–चक्र की नहीं, अहिंसा प्रिय अशोक–चक्र की। साथ ही दिल की धड़कन को उत्तेजित करने वाले 'वन्दे मातरम्' तथा गले का हार बनने वाले 'सदा शक्ति, बरसाने वाले 'गीत को धता बताकर– 'जागते समय किसी के नाम से आशीष की आँकाक्षा करते हुए– उसकी जय गाथा' के गीत को राष्ट्रगान का रूप दिया गया। नई पीढ़ी को इसकी पृष्ठभूमि का पता चलेगा तो............?

यही नहीं शान्ति के मूल मंत्र– 'शक्ति संचयन' की उपेक्षा कर आकाश में कबूतर उड़ाकर शाँति के पैगाम दिये गये। अखण्ड भारत की पोल तो उसी दिन खुल गई थी, जब गृह मंत्रालय से एक रिसायत विशेष को विदेश मंत्रालय ने अपनी अधीनता में लिया था। उसका जो अंजाम हुआ, उसे संसार ने विस्मय से देखा और राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण जब यह प्रश्न यू.एन.ओ. में गया– (कैबनिट–या विधि विशेषज्ञों की बिना अनुमति के) उसी दिन तत्कालीन भारतीय विदेश मंत्रालय के विदेश सचिव (संभवतः) श्री गिरिजा शंकर वाजपेयी ने अपना माथा पीट लिया था– यह कह कर कि अब यह समस्या कभी नहीं सुलझेगी। गत 65 वर्षों से तो यह भविष्यवाणी सत्य ही सिद्ध हो रही है। यदि कभी सुलझेगी तो जिस प्रकार दो राष्ट्रों की गम्भीर समस्याएँ सुलझती हैं वैसे ही। तत्कालीन प्रधान–मंत्री ने तो तिब्बत का क्षेत्र भी जो कभी भारत का अभिन्न अंग माना जाता था– चीन के आगे परोस दिया। हाँ उसके धर्मगुरु दलाई लामा को शरणागत अवश्य बनाया हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम के थके माँदे दिग्भ्रमित पहरूओं की आँखें जब खुलीं जब पड़ौसी राष्ट्र ने हमें तमाचा मार कर समझाया कि राष्ट्र, शक्ति के बल पर जिया करते हैं– गाल बजाने और उपदेश देने से नहीं और भारत को लज्जित होकर अपमान का घूंट पीना पड़ा। जिसे इतिहास कभी भुला न सकेगा।

इस संदर्भ में यह कथन उपादेय होगा कि तत्कालीन राष्ट्रपति कैनेडी से किसी पत्रकार से किसी पत्रकार ने एक बार पूछा– 'आप दुनिया में शाँति स्थापना की बातें करते हैं किन्तु निरन्तर शक्ति संचयन भी कर रहे हैं।' उस नव युवक राष्ट्रपति ने बड़ा ही स्टीक तथा सार गर्भित उत्तर दिया। 'क्योंकि हम दुनिया में शान्ति चाहते हैं– इसलिए शक्ति संचयन कर रहे है।' स्पष्ट है दुर्बल राष्ट्र यदि शाँति स्थापना की बातें करें तो केवल ढोल की पोल ही साबित होगी। जैसा हम सब देख चुके हैं। यहाँ श्री कृष्ण की उस नीति की ओर ध्यान जाता है कि 'आक्रमण ही रक्षा का सबसे कारगर उपाय है।' यदि विजय तथा सफलता चाहते हो तो सशक्त आक्रमण की क्षमता होनी चाहिए, न कि रिरियाते हुए ये घोषणाएं करना कि हम किसी भी बाहरी आक्रमण का मुकाबला करने के लिये तैयार हैं।

अब फिर मूल प्रश्न पर आते हैं, कि हमारे तत्कालीन प्रभावशाली नेता इस देश–तोड़क, दुर्भाग्यपूर्ण, दुःखदायी योजना के सामने निरीह बन घुटने न टेककर हिम्मत और आत्मविश्वास के साथ अड़ जाते तो इस विनाशकारी विभाजन से बचा जा सकता था। निश्चय ही इससे खून खराबा होता, अनेक जाने जातीं, विध्वंश होता, पर देश का लज्जाजनक विभाजन और अस्मिता तो बच जाती, और भारत, भारत ही रहता। संभव है इस की नौबत ही नहीं आती।

क्या अब लाखों जाने नहीं गई? अरबों की सम्पत्ति नष्ट नहीं हुई? घर–बस्तियाँ और नगर नहीं उजड़े? लाखों लोग अपंग नहीं हुए? देवियों की अस्मत् नहीं लूटी? ललनाओं के ललाट के सिन्दूर नहीं पूंछे? अनगिनत घर परिवार सूने नहीं हुए? राज्य सभा के सदस्य तथा कांग्रेस के नेता श्री राजीव शुक्ल ने लिखा है– 'बंटवारे के समय 12 लाख लोगों का खून खराबा हुआ।'

.... लेकिन दाद देनी होगी उन उजड़े हुए, घर से बेघर हुए, असंख्य नर–नारियों की जो लुट पिटकर, अपनी इज्जत, आबरू गँवा कर यहां आये, जिन्हें शरणार्थी भी कहा गया, जो दर–दर की ठोकरें खाते लम्बे समय तक खुल आसमान के नीचे, धरती माँ के आँचल में आतप, शीत और वर्षा के थपेड़े सहन करते हुए अपने पुरुषार्थ और अडिग आत्मविश्वास से स्वयं को विस्थापित से प्रतिष्ठित कर नव–निर्माण के द्वारा देश की दशा और दिशा को सँवारने में सफल हुए।

स्वतंत्रता के पश्चात् : वैसे तो समस्त देश ही उस विनाशक विभाजन से कराह उठा था, लेकिन इसकी सर्वाधिक कसक और टीस सीमान्त–प्रदेश तथा उसके निर्विवाद नेता खान अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ व उसके अनुयायिओं को झेलनी पड़ी। भले ही बाद में गफ्फार खाँ साहब को 'भारत रत्न' से नवाजा गया हो पर क्या यह सम्मान उन्हें भारतीय आजादी का उल्लास प्रदान करा सका? क्या उस कसकती–कराहती व्यथा–कथा को अन्य कोई महसूस कर सकेगा, जो उन की रक्त रंजित अविरल झरती अश्रुधारा की गाढ़ी स्याही में डुबोकर, आहों और पश्चाताप की लेखनी से भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम के काले पन्नों पर काँपते हाथों से अंकित की गई है? उसे तो कोई भुक्त–भोगी ही महसूस कर सकता है। 'जाके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई?'

इस दुखद दिल चीर दुर्घटना के घटित होने पर 'सीमान्त गाँधी' ने अपनी तड़पती वेदना कुछ इन शब्दों में व्यक्ति की थी– 'गाँधी जी! आपने तो अपनी जगह सुरक्षित कर ली, मगर हमें सदा के लिए भेडियों के बीच में धकेल दिया।

"कैसी अनहोनी हुई बँधावे धीर।
अपने बेगाने हुए किसे सुनाएँ पीर।।

हा–हन्त! सुनकर कलेजा मुँह का आता है। जिस अब्दुल–गफ्फार खाँ के स्वागत में कभी सारा देश पलक–पाँवड़े बिछा देता था, आज उसके दुखान्त जीवन के लिये कोई दो आँसू बहाने वाला भी नहीं रहा। स्वार्थ की पराकाष्ठा की और क्या परिभाषा हो सकती है?

स्वतंत्रता संग्राम के तथा कथित पुराधाओं ने तो आजादी के बाद सत्ता सुख का स्वाद चखा और चख देते हैं। मगर जिस अब्दुल गफ्फार ने खूँखार पठानों को गाँधी जी का अनुयायी बनाकर सत्य अंहिसा का पुजारी बनाया–उन्हें क्या मिला? अपमान, प्रताड़ना, अमानवीय पीड़ा, गुलामी, जेलों की दुर्दमनीय घुटन, हथकड़ी और बेडियाँ? सीमान्त गाँधी तो यौवन से लेकर उम्र के ढलान तक अंग्रेजों की जेलों में अमानवीय अत्याचार

शेष पृष्ठ 9 पर ☞

निरन्तर विषवमन के बावजूद :

● हरिकृष्ण निगम

"गुजरात का चमत्कार" – कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रो. अरविन्द पाणिगढ़िया का दो टूक निष्कर्ष

आज भारत और इसका प्रमुख राज्य गुजरात कहां से कहाँ पहुंच चुका है पर आज भी हमारे देश की अंग्रेजी अखबारों की दुनिया सन् 2002 के गुजरात में ही सिमटी है। दुष्प्रचार में एक दशक से लगे कुछ भारतीय बुद्धिजीवी, यह विस्मय की बात है, ऐसे चश्मों से अभी भी देख रहे हैं जहां वे अपने अर्थशास्त्र को संकीर्ण राजनीति से पृथक करने में असमर्थ हैं।

यह विचार हाल में न्यूयार्क स्थित कोलाम्बिया विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर अरविन्द पाणिगढ़िया ने व्याप्त किए हैं। सच देखा जाए तो वे वही बात दोहरा रहे हैं जो अमेरिका और इंगलैण्ड के बड़े समाचार पत्र जैसे न्यूयार्क टाइम्स, "वाशिंगटन पोस्ट" या लंदन के 'गार्जियन' या ''टाइम्स'' पहले भी दोहरा चुके हैं। पहले भी अरविन्द पाणिगढ़िया कोलाम्बिया विश्वविद्यालय के दूसरे विश्वविख्यात अर्थशास्त्री जगदीश भगवती के साथ मिलकर एक 'प्रोजेक्ट सिन्डीकेट' के सर्वाधिकार सुरक्षित लेख में कांग्रेस युग के सम्भावित अन्त की, राहुल गांधी को पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयासों के बावजूद, घोषणा कर चुके हैं।

'गुजरात मिरेकिल' शीर्षक से ''टाइम्स आफ इंडिया'' के 22 सितम्बर 2012 के अपने एक अग्रलेख में अरविन्द पाणिगढ़िया स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य ने जो बड़ी आर्थिक प्रगति की है उसे नकारा नहीं जा सकता है। इसके विपरीत कांग्रेस और जली–भुनी अंग्रेजी मीडिया के एक वर्ग के कर्णधारों की शुतुर्मुगी दृष्टि हास्य स्पद प्रतीत होती है। मोदी के विरूद्ध विषवमन को कांग्रेस दल की अपनी अक्षमताओ से ध्यान हटाने के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है।

लेखक के अनुसार यदि बड़े व समृद्ध राज्यों के विकास से तुलना की जाए तो जहां तक 2009–2010 के उनके प्रति व्यक्ति ''नेट स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (एन.एस.डी.पी.)'' का प्रश्न है गुजरात तृतीय स्थान पर आता है। गुजरात इस मानदण्ड पर महाराष्ट्र और हरियाणा से पीछे है पर तमिलनाडु, केरल, पंजाब और कर्नाटक ने इसी क्रम में ऊपर है। मोदी अक्टूबर 2001 में सत्ता में आए थे। बाद के आठ वर्षों में अर्थात् 2002–03से सन् 2009–2010 तक गुजरात का एन.एस.डी.पी. 10.5 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ा था। तब इसके निकट के प्रतिद्वन्दी राज्य महाराष्ट्र की यह दर 10.1 प्रतिशत थी। यद्यपि मोदी ने विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था विरासत में पाई थी पर वे इसे नई ऊंचाईयों तक ले गए।

लेखक के अनुसार कृषि के क्षेत्र में गुजरात की प्रगति अकल्पनीय और सर्वाधिक विशिष्टता पूर्ण थी और यह कार्य सम्पादन 'मैन्यूफैंकचरिंग' क्षेत्र में था। जहां राष्ट्रीय औसत 15 प्रतिशत था गुजरात में 2009–10 में जी. एस.डी.पी. का 27.4 प्रतिशत था। आलोचक इन आंकड़ों की यह प्रतिशत वृद्धि महत्वहीन मानें पर भारत में उत्पादन को कठिन चुनौतियां जो राज्य झेल रहे हैं उस सन्दर्भ में यह गुजरात का कीर्तिमान माना जाएगा। गुजरात में भारत में फैली गरीबी की औसत को देखते हुए यह बहुत कम है सच तो यह है कि यह गिर रही है। गरीबी की सरकारी परिभाषा की विभाजन रेखा या उसके जांचने के जितने आधिकारिक मानदण्ड है पर गुजरात में मात्र पिछले पांच वर्षों में (2004–2005 और 2009–10) गिरावट के प्रभावशाली आंकड़े उपलब्ध हैं जो 9 प्रतिशत है। यह राष्ट्रीय औसत से सात प्वाइन्ट नीचे है।

लेखक की हाल की शोध के अद्यतन आंकड़े भी आंख खोलने वाले हैं। अनुसूचित जातियों, जनजातियों को भी विकास की इस गति का फल मिल रहा है, जिसे वहां की जानकारी नहीं, बाहर से आए निवेश करने वाले या बड़े उद्योगपति भी सत्यापित कर रहे हैं। मोदी के आलोचकों का यह राग अलापना कि सामाजिक क्षेत्र में कुछ नहीं हो रहा है, पर उनकी सीमित दृष्टि अपने चुने हुए कुछ सूचकांकों पर ही और उन सूचकांको की विस्तृत परिधि को देखना ही नहीं चाहते। शिक्षा के क्षेत्रों में तो देश के मोदी के आलोचक जानबूझ कर आंख मूंद लेते हैं (साक्षरता की दर 2001–2011 के दौरान गुजरात में 10 प्रतिशत बिन्दु बढ़ी जो किसी भी राज्य की तुलना में अधिक थी। आज यहां की साक्षरता दर 79.3 प्रतिशत है जो तमिलनाडु और महाराष्ट्र से कुछ ही कम है। यदि स्वतंत्रता के तुरन्त बाद की गुजरात की साक्षरता की स्तर को मुड़कर देखें तो यह प्रगति केरल की इन साक्षरता यात्रा से भी अधिक प्रभावशाली दिखेगी, अनेक वर्षों की लम्बी अवधि तक प्रगति के मानदण्डो पर कीर्तिमान बनाते रहने के कारण लेख का शीर्षक " गुजरात का चमत्कार" (दि गुजरात मिरेकल) साभिप्राय लगता है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, शिशुओं व मातृ मृत्यु दर की राष्ट्रीय औसत के नीचे आना भी एक उपलब्धि है और बच्चों के कुपोषण में कभी आना शायद मोदी की भर्त्सना करने वालों की नहीं दीखता है।

लेखक मानता है कि किसी भी सफलता की कहानी में चुन–चुन कर छिद्रान्वेषण करना सहज कार्य है पर गुजरात ने जो कीर्तिमान बनाया है उससे अप्रभावित रहना मुश्किल है। मोदी ने प्रेस की नकारात्मक दुष्प्रचार द्वारा बनाई छवि के बावजूद अल्पसंख्यकों से संवाद स्थापित करने का पारदर्शी प्रयास किया और चाहे लार्ड मेघनाद देसाई या हाल की शाहिद सिद्धिकी के उस 'नई दुनियां' के लिए विस्तृत साक्षात्कार के दौरान सुझावों की बात हो उस पर समझदारी दिखाई है, पर जिन्हें सिर्फ घृणा के चश्में से देखते हैं उनके लिए कोई भी टिप्पणी अप्रासंगिक होगी। सन् 2002 से आज तक गुजरात में कोई दंगा नहीं हुआ जब कि जो लोग गुजरात की पहले की राजनीति से परिचित है वहां हर वर्ष पिछले दशकों में साम्प्रदायिक दंगे होते थे– यह तथ्य अनदेखा नहीं किया जा सकता है। कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह या दूसरे प्रवक्ता नरेन्द्र मोदी नाजी नेता गेबत्स से उनका तुलना करें उनके आंकड़ों को कितना ही झूठे कहें पर सारे पश्चिमी प्रेस द्वारा कहीं बातों को आज झुठला नहीं सकते हैं।

ए–1002, पंचशील हाईट्स महावीर नगर
कान्दिवली (प) मुम्बई–400067

☞ *पृष्ठ 5 का शेष*

बालतरु और बूढ़ा ....

''पितृवर मैं आध्यात्य मार्ग का पथिक बनना चाहता हूँ। भौतिकता के मरुस्थल में मैं अपने जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहता हूँ।''

''तुम्हारा तो सारा जीवन ही आध्यात्ममय है। परोपकार से बढ़कर और क्या आध्यात्मिकता हो सकती है। ऋषि–मुनि तो तपस्या के भरा ईश्वर से कुछ मांगते हैं, लेकिन तुमने तो अपने होंठ ही सिल लिए हैं। साधकगण यज्ञ के द्वारा ईश्वर की आराधना करते है और उस यज्ञ के धूम को अपने शरीर को भस्मसात् करके तुम द्युलोक तक ले जाते हो तथा यज्ञ की समिधा बनकर अपने जीवन को स्वाहा कर देते हो और कहते हो– ''इदं न मम्'' अर्थात् यह शरीर भी मेरा नहीं है, विश्व के लिए समर्पित है। यज्ञ के संदेश वाहक होने के कारण तुम्हारा यश पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और द्युलोक तक फैला हुआ है।''

''पिता जी, आप मुझे क्षमा करें, मेरे कारण आपको पीड़ा हुई, मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ है। बालतरु ने खेद प्रकट करते हुए कहा।

इतने में बादल गरजने लगे, वर्षा होने लगी, नदी का जल बढ़ने लगा। बूढ़े प्रजापति को लगा कि मेरी कुटिया भी नहीं बच पायेगी। अब कहाँ होगा मेरा ठिकाना?

उन्होंने अपने आँसू छिपाते हुए कहाँ –बेटा, मैं तुम्हारे विना नहीं रह पाऊँगा। मैं अपनी कुटिया छोड़ सकता हूँ पर तुम्हें नहीं छोड़ सकता।

''आप प्रजापति होकर भी आँसू बहायें तो मैं भी अपने आँसू नहीं रोक पाऊँगा।'' बालतरु की आँखों में भी अश्रुकण झलकने लगे।

''अरे पगले, तुमने मुझे पिता कहा तो, क्या एक पिता अपने पुत्र की पीड़ा को देखकर आँसू नहीं बहा सकता?''

''पिता जी, आप मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जा सकते। मेरी छाया में आपकी शैया बिछेगी और मैं करुँगा आपकी सेवा। मैं ही तो हूँ आपका सच्चा समर्पित बेटा।'

बूढ़े प्रजापति ने आँसू बहाते हुए बालतरु को, अपने लाडले बेटे को गले से लगा लिया।

कुटी नं. 230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)

भ्रम निवारण

● स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

आत्मा और परमात्मा में अंश और अंशी का सम्बन्ध है। श्री भावेश मेरजा जी आपने 23–10–2012 को वैदिक सार्वदेशिक को जो ई मेल भेजा, उसको मैंने पढ़ा, जिस पर मेरा स्पष्टीकरण निम्न प्रकार है:–

(1) आपने अपनी समालोचना में स्वीकार किया है कि जीव और परमात्मा में व्याप्य–व्यापक का सम्बन्ध है अर्थात् परमात्मा जीव में व्यापक है और जीवात्मा परमात्मा में व्याप्य है।

मैंने अपने लेख में सर्व प्रथम जो शतपथ ब्राह्मण का उदाहरण दिया है, वह सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास सात के पृष्ठ 186 पर छपा है– जिसका अर्थ करते हुए महर्षि जी ने लिखा है– यह बृहदारण्यक का वचन हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी स्त्री मैत्रेयी से कहते हैं कि हे मैत्रेयी! जो परमेश्वर आत्मा अर्थात् जीव में स्थित और जीवात्मा से भिन्न है जिसको मूढ़ जीवात्मा नहीं जानता कि वह परमात्मा मेरे में व्यापक है। जिस परमेश्वर कर जीवात्मा शरीर अर्थात् जैसे शरीर में जीव रहता है वैसे ही जीव में परमेश्वर व्यापक है। जीवात्मा से भिन्न रहकर जीव के पाप–पुण्यों का साक्षी होकर उनके फल जीवों को देकर नियम में रखता है, वही अविनाशी स्वरूप तेरा भी अन्तर्भ्यामी आत्मा अर्थात तेरे भीतर व्यापक है; उसको तू जान। और भी:–

अनेन आत्मना जीवेनानुप्रविश्य
नामरूपे व्याकरवाणि।
(छा.उप.6–3–2)

तत्सृष्टट्वा तदेवानुप्राविशत् ।। तैत्रीय ब्रह्मान. अनु–611 इन वाक्यों का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में ही – ''परमेश्वर शरीर में प्रविष्ट हुए जीव रूप आदि की विद्या को प्रकट होकर वेद द्वारा सब नाम रूप आदि की विद्या को प्रकट करता है। और शरीर में जीव को प्रवेश करा आप जीव के भीतर अनुप्रविष्ट हो रहा है। जो तुम अनु शब्द का अर्थ जानते हो वैसा विपरीत अर्थ कभी न करते।

विवेचना– उपरोक्त से स्पष्ट हो गया कि परमात्मा, जीव में प्रविष्ट है। परन्तु परमात्मा पूर्ण रूप से प्रविष्ट नहीं होता, बल्कि उसका अंश मात्र ही प्रविष्ट होता है, जैसे–लोहे को गर्म करने पर उसमें अग्नि का अंश प्रविष्ट होता है।

नियम यह है कि सूक्ष्म वस्तु ही स्थूल वस्तु में प्रविष्ट करती है, स्थूल–सूक्ष्म में प्रविष्ट नहीं हो सकती। परमात्मा जीव से सूक्ष्म है अतः उसमें प्रविष्ट होकर रहता है। सूक्ष्म के गुण स्थूल में नहीं आते।

(2) **और भी वेद कहता है:–**

द्वा सुपर्ण सयुजा सखाया समांन वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरण्य; पिप्पत्नं स्वाद्वति अनश्नन् अन्यो अभिचाकशीत ।। ऋ. मं.–1 सू. 164 मंत्र–2011

अर्थ– ब्रह्म और जीव दोनों, चेतना और पालनदि गूणों रूप, सुन्दर पंखों वाले, सदृश व्याप्य भाव से संयुक्त परस्पर मित्रता युक्त अर्थात् प्रेम युक्त अर्थात प्रेम युक्त सनातन अनादि हैं। और एक ही कार्य प्रकृति रूप, वृक्ष का सब ओर आश्रय, आलिंगन करके बैठे हैं। उन दोंनों में से ब्रह्म से भिन्न दूसरा, जीव इस वृक्ष रूप संसार में पाप –पुण्य रूप कर्मो के फलों को अच्छे प्रकार स्वाद लेकर भोगता है और दूसरा, परमात्मा, कर्मों के फलों को न भोगता हुआ, सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है अथवा सब ओर से, जीव के कर्मों को साक्षी रूप देखता है।

विवेचना– उपरोक्त से स्पष्ट है कि जीव में अनुप्रविष्ट होकर प्रेम युक्त सनातन अनदि हैं। अतः परमात्मा का अंश ही जीव से संयुक्त है परमात्मा स्वयं प्रथक है। जैसे–माता –पिता का अंश में होता है।

(3)**और भी वेद कहता है:–**

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्पहाभवत्युनः।
ततो विप्वड्. व्यक्रामत्साशनानशने ऽ अभि।। यजु–31–4।।

अर्थ– तीन अंशो वाला पालक परमेश्वर सबसे उत्तम मुक्तिस्वरूप संसार से प्रथक उद्य को प्राप्त होता है। इस पुरुष का एक भाग इस जगत में बार–बार उत्पति प्रलय के चक्र से होता है। इसके अनन्तर खाने वाले चेतन न खाने वाले ञड, इन दोनों के पगति सर्वत्र प्राप्त होता हुआ, विशेष कर व्याप्त होता है।

भावार्थ– यह पूर्वोक्त परमेश्वर कार्य जगत से पृथक् तीन अंश से प्रकाशित हुआ एक अंश अपने सामर्थ से सब जगत को बार–2 उत्पन्न करता है, पीछे उस चराचर जगत में व्याप्त होकर स्थित है।

(4) **और भी:–**

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। यजु– 31–311

अर्थ– हे मनुष्यों ! इस जगदीश्वर का यह दृश्य, अदृश्य ब्रह्मण्ड महत्वसूचक है, इस ब्रह्माण्ड से यह परिपूर्ण परमात्मा अति प्रशंसित और बड़ा है और इस ईश्वर के सब पृथिव्यादि चराचर जगत एक अंश है और इस जगत सृष्टा का तीन अंश नाश रहित द्योतनात्मक अपने स्वरूप में है।

भावार्थ – यह सब सूर्य चन्द्रादि लोक लोकान्तर चराचर जितना जगत है वह सब चित्र–विचित्र रचना के अनुमान से परमेश्वर के महत्व को सिद्ध कर उत्पत्रि, स्थिति और प्रलय रूप से तीनों काल में घटने–बढने से भी परमेश्वर के एक चतुर्थांश में ही रहता है किन्तु इस ईयवर के चौथे अंश की भीअवधि को नहीं पाता, और इस ईश्वर के सामर्थ के तीन अंश अपने अविनाशी मोक्ष स्वरूप में सदैव रहते हैं। इस कथन से उस ईश्वर का अनन्त नहीं विगड़ता किन्तु जगत की अपेक्षा उसका महत्व और जगत का न्यूनत्व जाना जाता है।

विवेचना–वेद के उपरोक्त तीन मन्त्रों से स्पष्टतः सिद्ध है कि परमात्मा का चराचर जगत के साथ अंश और अंशी का सम्बन्ध होने के उपरान्त भी ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों सत्ता अनादि है तथा जीव और प्रकृति से ईश्वर सूक्ष्म है और आकाशवत अनन्त भी है।

श्री भावेश मेरजा जी आप में यथा नाम तथा गुण हैं आप भावेश में शीघ्र आ जाते हैं। मेरे लेख को यदि ध्यान पूर्वक पढकर उस पर शान्त मन से विचार किया होता तो आप शायद मेरे प्रति कटु शब्दों का प्रयोग न करते। आपकी समालोचना विराधा भाषी है। आपने यजुर्वेद भाष्य ध्यान से नहीं पढ़ा है।

उपरोक्त अन्य अर्थों और सत्यार्थ प्रकाश के उद्धारण में मेरा एक शब्द भी नहीं है। लेख भी मैंने वेद प्रमाण के साथ लिखा था। परन्तु आपने मेरे लिख के विरुद्ध कोई वेद प्रमाण नही दिया मात्र अपने शब्दों में मेरी आलोचना की है। जो एक विद्वान को शोभा नहीं होता।

मैं आपका आभारी हूँ क्योंकि आपने मुझे और गहरा अध्ययन करने को प्रेरित किया।

सार्वदेशिक सभा
नई दिल्ली–2
मो. 09868720739

☞ *पृष्ठ 7 का शेष*

गाँधी से गफ्फार.....

और यातनाओं का हलाहल झेलते रहे। आयु के अंतिम पड़ाव पर पाकिस्तान की जहरीली जेलों की अंधेरी, उमस और सीलन भरी कोठरियों में घुट–घुट कर मौत की घड़ियाँ गिनते रहे। कंकर भरी सब्जी और रेत भरे आटे की रोटी निगलते रहे। उधर, इस देश में उंगली काटकर शहीद होने वाले लोगों के नाम पर तो स्कूल, कॉलिज, यूनिवर्सिटी, सड़के, बाजार, नगर अस्पताल, भवन, द्वार, उद्यान, पार्क, बाँध, संस्थान तथा विभिन्न योजनाओं का निरंतर निर्माण हो चुका और रहा है। परन्तु जिसने अपनी भरी जवानी और सिसकता बुढ़ापा लोहे के सीखचों के पीछे तपती धरती की सड़न भरी कोठरियों में बिताया उसे क्या मिला, जिसने सम्पन्न परिवार को त्याग कर भारत की आजादी के लिये फ़कीरी बना धारण किया, उसे क्या मिला? उसे दोनों मुल्कों में मिली नंगे तन पर मार, घुटन भरी जेल, कंकड भरी पनैली दाल और मिट्टी भरी जली रोटियाँ।

वर्तमान पीढ़ी तो यह भी नहीं जानती कि सीमान्त–गाँधी थे कौन? स्वतंत्रता–संग्राम में उनका क्या योगदान है? आजादी के बाद की भारतीय सरकारों ने तो ऐसी हुतात्माओं के पावन–बलिदानी चरित्रों को शिक्षा की सामान्य पाठ्य पुस्तकों में स्थान देने तक की जरूरत भी नहीं समझी। केवल इने गिने व्यक्तियों के नाम पर ही देश की योजनाओं परियोजनाओं और भावी कार्यक्रमों की नींव भरी जा रही है।

दि. 20 मई 2012 के 'दैनिक जागरण' छपे समाचार से इस तथ्य की पुष्टि होती है। उसने लिखा है– 'केन्द्र की 58 योजनाओं में 24 इन्दिरा राजीव के नाम।' बीते 18 वर्षों में नेहरू गाँधी–परिवार की तीन हस्तियों के नाम पर केन्द्र और राज्य सरकार के करीब 450 कार्यक्रम परियोजनाएँ और राज्यस्तरीय संस्थाएँ चल रही है।'

लगता है खान अब्दुल गफ्फार खाँ जैसे देश भक्त, तपस्वी अमर बलिदानी की अमूल्य जीवन–गाथा मात्र ऐतिहासिक मिथक रही जायेगी और बाकी रह जायेगी उनके तन में जकड़ी 'हाथकड़ियों बेड़ियों की रगड़ से टपकती लहू की बूँदों की अमिट यादें।'

24/4, बिशन स्वरूप कालोनी, पानीपत
दूरभाषः 0180/2643700

पत्र/कविता

स्वामी दयानन्द के एहसानों का ऋण चुकाना है

मैं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'आर्य जगत्' का एक छोटा सा सदस्य हूँ जो इसमें प्रकाशित सभी लेखों को चाहे वो धार्मिक हों, अध्यात्मक हों, सामाजिक हों या कविता और भजन के रूप में छपे हों या आर्य समाज में होने वाली गतिविधियों से सम्बन्धित हों नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूँ। सभी लेख जीवन वर्धक प्रेरणादायक और आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिये अतिलाभकारी हैं। इस कार्य के लिये आपका योगदान अति सराहनीय है।

महोदय मैं भी श्रद्धेय स्वामी दयानंद सरस्वती का एक छोटा सा सिपाही हूँ जो अपने भजनों तथा गीतों के माध्यम से निरन्तर आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार के प्रत्यनशील हूँ। स्वामी दयानंद जी के हम आर्याजनों पर इतने अहसान हैं जिनको जन्म जन्मान्तर तक उतारना असम्भव सा है। यदि इन बोझों के कुछ अंश उतार सकूँ तो अपने आपको धन्य समझूंगा। अपने गीतों द्वारा मैं ऋषि चुकाने में प्रयत्न शील रहूँगा।

– रत्न लाल मॉंडला संगर
मकान न. 549 नजदीक खन्ना गैस सैंटर
धूरी रोड संगरूर (पंजाब) 148001

****

''अग्नि जागरण''

– उत्तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे।
यतवा स्त्रुच: समस्थिरन्॥
ऋ.10.118.2॥

शुभ आहुतियाँ स्वीकार आग।
हे अग्नि देव उठ जाग जाग ॥

सुन्दर वेदी समिधायें हैं।
आसन से सजी दिशायें हैं।
हे अग्नि तुम्हारे स्वागत को,
विद्वान अतिथि भी आयें हैं।
करते अर्पित अनुराग राग।
हे अग्नि देव उठ जाग जाग॥1॥

तू घृत की आहुति पाता है।
तू खूब चमकता जाता है।
विद्वान अग्नि के गुणधारी,
धृत-स्नेह उन्हें उमगाता है।
यजमान बनायें महाभाग।
हे अग्नि देव उठ जाग जाग॥2॥

हर चमस चमस घृत हव्य ग्रास।
कर तेजोमय स्थिर सुवास।
प्रिय अग्नि ज्योति विद्वान प्रीति,
देते सबको उल्लास आश।
प्रभु, यही रहे वरदान माँग।
हे अग्नि देव उठ जाग जाग॥3॥

देव नारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अविन्तका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.)

रक्त दान से कुछ घटता नहीं

कई तरह के दानों एक रक्तदान भी है। रक्तदान एक पुण्य कार्य हैं। खून दान करने से कम नहीं होता फिर बढ़ जाता है। ठीक वैसे ही जैसे हम बाल काटते हैं और फिर बढ़ जाते हैं। कुए से पानी निकालते हैं और फिर बढ़ जाता है तुलसी के पत्ते दिन–प्रति–दिन तोड़ने के बाद भी निरन्तर बढ़ता रहते है। पौदीना काटने के बाद भी निरन्तर बढ़ता है। चाय की पत्ती की प्रवृत्ति ठीक इसी प्रकार है, हर पन्द्रह दिन में फिर तोड़ते जाते हैं। और फिर चाय की पत्ती का पौधा तैयार हो जाता है। रक्त दान से तुम्हारा कुछ नहीं घटता है। किसी मरते हुए को नई जिंदगी अवश्य मिल सकती है।

रक्त पानी बने, इससे पहले उससे किसी की जिंदगी बना दो।

याद रखो जीते जी रक्त–दान, जाते–जाते देह दान जाने के बाद नेत्रदान।

कृष्ण मोहन गोयल
113– बाजार कोट–अमरोहा

****

यज्ञ की पूर्णाहूति

सभी आर्यो का जीवन यज्ञमय है। सभी लोग यज्ञ करते हैं करवाते हैं, या नहीं तो उसमें भाग अवश्य लेते हैं। आर्य समाज की बैठकों में यज्ञ करते हैं। भवनों में आयोजन होता है। साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक यज्ञ एक पवित्र कार्य है। लोग संयम और नियम के पालन के साथ यज्ञ के पास फटकते हैं। पूरा आर्य समाजी परिवार निरामिष नहीं है। कभी–कभार खा पी लेते हैं। अभक्ष्य अन्न या अपेय पदार्थ। मगर जब यज्ञ की बात आती है तो एक आध सप्ताह से व्रत का पालन करके नियम से रहते हैं। पवित्रता के साथ यज्ञ में जाते हैं। यजमान बनते हैं और यज्ञ के भागी बनते हैं। यज्ञ का आयोजन हर परिवार कभी न कभी करता है। समाज में हर सदस्य अपनी बारी–बारी से यज्ञ करवाते हैं। अपने घर पर या असुविधा हो तो बैठक या मंदिर में ही सभी व्यवस्था करते हैं। आप, जनता, जान–पहचान के लोग, पास पड़ोस के लोग आ जाते हैं। दूर बैठे ही श्रद्धा के साथ भाग लेते हैं। कभी–कभी ऐसा होता है कि पंडित जी अपनी लोकप्रियता का परिचय देने लग जाते हैं। सभी यज्ञ में आये लोगों को पूर्णाहुति की तीन की तीन आहुतियाँ देने के लिये आमन्त्रित कर देते हैं। यजमान और उसके परिवार, बाल–बच्चे तो पहले से ही व्रत धारण किये हुए होते हैं। उनकी आहुतियां तो कबुल होती हैं। सोचते सकुचाते यज्ञ में आर्य लोग भी एक के बाद एक आने लगते हैं। कुछ कानाफूसी भी होने लगती है। कोई आना भी नहीं चाहता क्योंकि वह नियम से नहीं है। या कोई और रुकावट से बंधे हो। न चाहते हुए भी लोगों को जाते देख उन्हें भी जाना पड़ता है। नहीं तो लोग क्या सोचेंगे। हवन में आये हैं और आहुतियाँ चढ़ाना नहीं चाहती। बात क्या है? हो सकता है। जल्दी में नहाया नहीं हो। या पहली रात को कुछ अभक्ष्यखा लिया हो। या कल के मैले वस्त्र की पहन कर आ गया हो। अन्यों को जाते देख ऐसे व्यक्ति को भी जाना ही पड़ता है। यजमान परिवार तो पहले से तैयार थे और उस आगन्तुक को तुरन्त मानसिक रूप से तैयार होकर आहुतियाँ देनी पड़ जाती हैं। पंडित आचार्यजी का आवाहन सही है या गलत यह आर्यजगत् और यज्ञ परिवार और स्वयं पंडित जी बता सकते हैं। फिर भी लगता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए

– सोनालाल नेमधारी
कारोलिन, बेल एयर , मोरिशस
फोन: (230) 4192661

****

आर्य समाज में मूल की भूल

● कन्हैया लाल आर्य

महर्षि दयानन्द ने भारतवर्ष में सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना करके श्रेष्ठ समाज का सपना देखा था। परन्तु महर्षि दयानन्द का यह सपना साकार नहीं हो पाया। आर्य का तात्पर्य श्रेष्ठ और समाज का अर्थ है समझ धारण करने वाला समूह अर्थात् श्रेष्ठ समझ धारण करने वाला संगठन। आर्यसमाज अपने दस नियमों से हटकर कर्मकाण्डीय रह गया है और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अपने का आर्य न कहकर आर्य समाजी कहते हैं, जिससे कार्यकर्ताओं में आर्यत्व भाव का अभाव रहता है। फलतः आर्य समाज में श्रेष्ठ समझ धारण करने वाले नहीं हैं। कार्यकर्त्ता चुनाव में पद के लिए झगड़ते हैं और मामले को न्यायालय तक ले जाते हैं। ऐसी स्थिति होने का कारण आर्यसमाज में निम्न बताई मूल की भूल हैः–

1. आर्यसमाज में प्रथम मूल की भूल है ईश्वर की प्राप्ति न करना। आर्यसमाज का दूसरा नियम है –*''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसकी उपासना करनी योग्य हैं।''* आर्य समाज में कितने लोगों ने ईश्वर की प्राप्ति की है। इसका उत्तर होगा कि ईश्वर की प्राप्ति किसी ने नहीं की। ईश्वर की प्राप्ति होती है, योग साधना से। परंतु आर्यसमाज में महर्षि पंतजलि योग के नाम पर ''हठयोग'' शिविर लगाकर शिविरर्थियों को सिखाया जा रहा हैं। हठयोग एक प्रकार का व्यायाम है जो ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है। ईश्वर प्राप्ति का साधन पतंजलि योग दर्शन में दर्शित हैं। यदि हम इस योग साधना से नित्य अभ्यास करते तो ईश्वर की प्राप्ति करते और लोगों को भी योग–साधना सीखाकर ईश्वर प्राप्ति कराते तो उनसे अपने आप मूर्ति पूजा छूट जाती। खेद है कि ईश्वर की प्राप्ति करते और लोगों को भी योग–साधना सिखाकर ईश्वर प्राप्ति करना आर्यसमाज में महर्षि दयानन्द के बाद आज तक नहीं हो रहा है, जिससे हम ईश्वर से अछूते हैं। अब भी ईश्वर प्राप्ति शिविर के माध्यम से सीखें व सिखावें तो आर्यसमाज यथार्थ में श्रेष्ठ समाज होगा और वाद–विवादों से हम सर्वथा दूर रहेंगे।

यहाँ कोई प्रश्न करे कि हमें ईश्वर की प्राप्ति कहाँ होती है? देखो! हमारे शरीर में कण्ठ के नीचे, नाँभि के ऊपर और दोनों स्तनों के बीच जो गर्त (गड्ढा) है, उसे हृदयाकाश कहते हैं। इस हृदयाकाश में हमारी आत्मा रहती है, जो इस हृदयाकाश में सर्वव्यापक ईश्वर की प्राप्ति करता है। हमारी आत्मा हृदयाकाश में रहकर हमारे शरीर को प्राणशक्ति से संचालित करता है। याद रहे कि नित्य योगाभ्यास करने पर इस हृदयाकाश में हमारी आत्मा और परमात्मा की अनुभूति होती है। हमारा आत्मा और परमात्मा दोनों हवा की भाँति निराकार हैं, दर्शनीय नहीं। इसलिए इनकी अनुभूति होती है। जैसे सुख–दुःख की अनुभूति होती है। यह अनुभूति आनन्दमय होती है, जो सुख से ऊपर होती है।

देखो! ईश्वर को मुसलमान सातवें आसमान पर और ईसाई चौथे आसमान में तथा हिन्दु क्षीर सागर में होना बताते हैं। परंतु तीनों का केन्द्र एक ही है। दोनों स्तनों के बीच जो गड्ढा है, उसको आकाश या आसमान कहते हैं। इस गड्ढे में आत्मा रहती है, इसलिए उसे हृदयाकाश कहते हैं। यह हृदयाकाश सबके लिए ईश्वर के मिलने का स्थान है और सभी यहीं पर हाथ जोड़ते है या रखते हैं।

योग साधना द्वारा ईश्वर की प्राप्ति की विधि महर्षि दयानन्द ने उनके द्वारा रचित ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के उपासना विषय प्रकरण में बताई है, जिसके अनुसार आर्य समाज वाले शिविर लगाकर योग साधना का अभ्यास करें तथा करावें। इस तरह निरन्तर अभ्यास करत रहने पर ईश्वर की प्राप्ति होगी। इसी भाँति गुरुकुलों में प्रत्येक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी को सिखावें, तभी योग साधना से श्रेष्ठता आएगी।

2. आर्य समाज में दूसरी मूल की भूल है, सामाजिक। सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में स्वयंवर की रीति में प्रश्न किया है कि विवाह माता–पिता के अधीन होना चाहिए या लड़का–लड़की के अधीन रहे? उत्तर में कहा गया है कि लड़का–लड़की के अधीन उत्तम है। इसी समुल्लास में विवाह के लक्षण में कहा है कि कन्या और वर का विवाह के पूर्व एकान्त में मेल न होना चाहिए, क्योंकि युवावस्था में स्त्री–पुरुष का एकान्तवास दूषण कारक है। परन्तु जब कन्या या वर के विवाह का समय हो अर्थात् गुरुकुल में जब एक वर्ष वा छह महीने ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या पूरी होने में शेष रहें तब उन कन्या और कुमारों का प्रतिबिम्ब अर्थात् जिसको 'फोटोग्राफ' कहते हैं अथवा प्रतिकृति उतार कर कन्याओं की अध्यापिकाओं के पास कुमारों की और कुमारों के अध्यापक के पास कन्याओं की प्रतिकृति भेज देवें। जिस–जिस का रूप मिल जाए उस उसके इतिहास अर्थात् जन्म से लेकर उस दिन पर्यन्त जन्म चरित्र का पुस्तक हो, उसको अध्यापक लोग मंगवाके देखें। जब दोनों के गुण, कर्म, स्वभाव सदृश हों तब जिस जिसके साथ विवाह होना योग्य समझे उस पुरुष और कन्या का फोटो और इतिहास कन्या और वर के हाथ में देवें और कहें कि इसमें जो तुम्हारा अभिप्राय हो हमको विदित कर देना। जब उन दोनों का निश्चय परस्पर विवाह करने का हो जाए तब उन दोनों का समावर्तन एक समय में होगा जब वे कन्या व वर आमने–सामने होकर बातचीत करना चाहें तो अध्यापकों के समक्ष करें और गुप्त बात पूछना चाहें तो अध्यापकों के सामने लिखकर एक दूसरे के हाथ में देकर प्रश्नोत्तर कर लेवें। जब दोनों का विवाह तय हो जावे तब गुरुकुल में ही विवाह कर लेवें। इसमें वर व कन्या के माता–पिता को भी आमन्त्रित करें।

उपर्युक्त प्रावधान का अनुकरण आर्यसमाज में आज दिन तक नहीं हुआ है और न हो रहा है। यदि इस प्रावधान का अनुकरण होता तो आर्यसमाज में लोग वैसे मिलते जैसे नदियाँ समुद्रों में जाकर मिलती हैं। कारण कि इसमें मनुष्यों की सामाजिक समस्या का बड़ा समाधान हैं। इसमें कन्या व वर अच्छी शिक्षा व संस्कार पाकर सदाचारी होते है और साथ ही जाति प्रथा, अस्पृश्यता, पर्दाप्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह आदि का अन्त होता है और शुद्धि में शुद्ध हुए लोग भी वापस अपने समुदाय में नहीं लौटते। अब भी उक्त प्रकार की रीति–नीति अपनाई जावे तो आर्यसमाज की सामाजिक उन्नति हो सकेगी।

3. आर्य समाज की तीसरी मूल की भूल है गाँवों में गोकृष्यादिरक्षिणी सभा का क्रियान्वयन न करना। क्योंकि भारत गांवों का देश है जहाँ गौ–पालन व कृषि होती है। गोपालन से किसान को सर्वोत्तम गोबर खाद मिलती है, जिससे अधिक मात्रा में स्वास्थ्यप्रद व स्वादिष्ट अन्न, सब्जी व फल मिलते हैं। जैसे दवाइयों में भस्म काम करती है वैसे ही गोबर के उपलें बनाकर उसे सुखावें और जलाकर उसकी भस्म खेत में डालें, तो अधिक मात्रा में अन्न आदि उत्पन्न होगा और कीड़े नहीं पड़ेंगे अर्थात् रोग रहित, पौष्टिक तथा स्वादिष्ट अन्न आदि होगा। गौ से दूध, घृत, दधि व छाछ आदि मिलता है, जो हमें प्रयोग से नीरोगता एवं पौष्टिकता देते है एवं बुद्धि उत्तम होती है। गोघृत यज्ञ जीवन का आधार है। गोघृत से यज्ञ करने से पर्यावरण शुद्ध होता है और किसी भी प्रकार का प्रकृति विकार नहीं होता तथा कृषि सुरक्षित रहती है। भारत कृषि प्रधान देश है और यज्ञ के अभाव में खेती सदा बनी नहीं रहती अर्थात् यज्ञ के बिना समय पर पर्याप्त वर्षा नहीं होती और सदा अकाल का भय रहता है। इसलिए प्रत्येक खेत पर किसानों द्वारा नित्य सुबह–सायं यज्ञ होते रहना चाहिए। कृषि के साथ गोवंश का होना आवश्यक है, क्योंकि गोवंश और कृषि एक दूसरे पर निर्भर है अर्थात् दोनों का चोली–दामन का साथ है। किसानों द्वारा गोपालन नहीं होने से भारत के गाँव दिन–प्रतिदिन पतन की ओर जा रहे हैं। गोवंश आधारित खेती न होकर विदेशों की तर्ज पर यन्त्रों व रासायनिक खादों पर आधारित हो गई है, जिसके कारण अन्न व शाक–सब्जी विषैली उत्पन्न हो रही है एवं जिसके प्रयोग से हमारा शरीर रोगीला हो रहा है और खेती की भूमि बंजर हो रही है। खेती की उपज इतनी खर्चीली हो रही है कि किसान आत्महत्या कर रहे हैं उन्हें लाभकारी मूल्य नहीं मिल रहा है। गोपालन के अभाव में हमें असली घी–दूध नहीं मिल रहा है। फलतः हमारी शारीरिक हानि हो रही है।

आर्य समाज को गोकृष्यादि की रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति इस समय लगानी चाहिए। महर्षि दयानन्द ने अपने समय में ही गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की आवश्यकता समझी थी जिसके लिए उन्होंने *'गौकरूणानिधि'* पुस्तक लिख कर इसकी पालना के निर्देश दिए थे, जिसकी आर्य समाज ने आज तक पालना नहीं की। यदि गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की गाँवों में स्थापना होती, तो आर्य समाज विश्व में उन्नति के शिखर पर होता।

आर्य समाज सजग हो जाए और आर्य समाज के कार्यकर्त्ता गाँवों में जाकर किसानों से सम्पर्क करें और उन्हें गोपालन के लिए प्रेरित करें। गोघृत से खेत पर प्रातः–सायं दैनिक यज्ञ कराना भी सिखाँए जिससे पर्यावरण शुद्ध होगा और खेती में किसी प्रकार का प्राकृतिक प्रकोप भी नहीं होगा, और खेती उत्तम होगी। इस लेख के लेखक ने इस संबंध में *'गो ही किसान की समृद्धि'* नामक पुस्तक लिखी है, जिसका प्रकाशन आर्य समाज, सिरोही (राजस्थान) ने किया है। यह पुस्तक 62 पृष्ठों में है और इसका मूल्य तीस रूपये है। इस पुस्तक में गोरक्षा, गोपालन और गोसम्वर्द्धन, खेती की विधि तथा यज्ञ करने की पद्धति बताई गई है और साथ ही लाभ भी बताए गए हैं।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द की भावना को समझे और भारत को सुराष्ट्र बनावे। सुराष्ट्र तभी होगा जब उक्त तीन बातों को अमल में लाओगे अर्थात् गोर, कृषि, यज्ञादि से शारीरिक उन्नति, ईश्वर उपासना से आत्मिक उन्नति करना और गुरुकुल से चरित्रवान शिक्षित बनाकर गुण कर्म स्वभाव के योग्य वर–वधु का आपस में विवाह कर सामाजिक उन्नति करना, तभी आर्य समाज उन्नती करेगा। इसमं हमें सर्वप्रथम गावों में किसानों को उन्नत करना होगा। फिर किसानों की आर्थिक सहायता से गुरुकुल खोलकर आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करें तभी सुराष्ट्र बन सकेगा।

आर्य समाज मार्ग,
सिरोही (राजस्थान) पिन कोड–307001

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 31/10 और 1/11/2012
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. मलेरकोटला के प्राचार्य, सरकारी मैडिकल कालेज, पटियाला द्वारा सम्मानित

रक्तदान एक महादान है। यह समाज को सबसे बड़ी सेवा के लिए श्री टी. सी सोनी प्रिंसीपल डी.ए.वी. स्कूल मलेरकोटला ने तीन रक्त दान कैंप पिछले तीन वर्षो में आयोजित किए। उनके द्वारा की गई इसी सेवा के लिए नैशनल वोलन्टरी रक्त दान दिवस 2012 के अवसर पर ब्लड बैंक, राजिन्द्रा अस्पताल, सरकारी मैडिकल कॉलेज, पटियाला द्वारा उन्हें 3 अक्तूबर 2012 को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डिप्टी कमिश्नर पटियाला तथा प्रिंसीपल सरकारी मैडिकल कॉलेज मौजूद थे। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष चौथा रक्त दान कैंप 11 अक्तूबर 2012 को स्कूल प्रागंण में आयोजित किया गया। जिसमें समाज के सभी वर्गों के सभी वर्गों के लोगों ने इस महादान में अपना योगदान दिया।

आर्यसमाज अजमेर का 131 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर का 131 वां वार्षिकोत्सव तक चतुर्वेद शतकं यज्ञ हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महोपदेशक तथा सुप्रसिद्ध याज्ञिक एवं वैदिक ऋचाओं के मधुर व्याख्याकार आचार्य अखिलेकश्वर जी के ब्रह्मत्व में वेदपाठी श्री देवदत्त शास्त्री, श्री अमर सिंह शास्त्री एवं श्री सुधांशु शर्मा ने वेद मंत्रों से आहुतियां दिलवायीं। भजनोपदेशिका साध्वी **डा. उत्तमायति** एवं आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. कंचन कुमार जी के सुमधुर भजनोपदेश हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज, अजमेर के प्रधान प्रो. रासासिंह ने ध्वजारोहण कर किया। इस अवसर पर दयानन्द बाल सदन, अजमेर के बालक–बालिकाओं के द्वारा ध्वज गीत **''जयति ओ३म् ध्वज.....''** प्रस्तुत किया गया। आर्य समाज, अजमेर द्वारा नगर के विभिन्न विद्यालयों में भी विद्वानों के प्रवचन व भजनोपदेश करवाये गये। यज्ञ में नगर के धर्मप्रेमी सज्जनों ने यजमान के रूप में आहुति दीं।

आर्य समाज अजमेर के वरिष्ठ उपप्रधान सोमरत्न आर्य ने वार्षिकोतसव के अवसर पधारे हुए अन्य आर्य समाजों (जयपुर, रूपनगर, किशनगढ़ नसीराबाद, ब्यावर, मसूदा) के पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर पूर्णाहुति के दिन ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

यज्ञ में सैंकड़ों लोगों ने डाली आहुतियाँ

अच्छी वर्षा व खुशहाली के लिए वर्षा के आमंत्रण हेतु कोटा में पंच कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ के मुख्य यजमान विधायक ओम बिरला, डॉ. श्रीमती अमिता बिरला व यज्ञ के ब्रहमा आर्य समाज विद्वान वृद्वि चन्द शास्त्री थे जिनके साथ आर्य समाज के पुरोहित पं. रामदेव शर्मा, डी.ए.वी. के धर्मशिक्षक पं. शोभाराम आर्य, जिला प्रधान अजुनदेव चढ़डा, रामप्रसाद याज्ञिक, बनवारी लाल सिंघल, जे.एस.दुबे, श्रीचन्द गुप्ता, रघुराज सिंह ने सामूहिक रूप से ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के वेद मंत्रों का सस्वर पाठ किया।

अलग–अलग पांच कुण्डो पर सैकडों लोगों ने वेदमंत्रों के अन्त में उच्च स्वर से स्वाहा बोल–बोलकर आहुतियाँ डालीं।

जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आदिकाल से यज्ञ परम्परा रही है, हमारे अनेकों महापुरूषों, राजा महाराजाओं ने भी समय समय पर जब भी राष्ट्र पर कोई भी आपत्तिकाल आता था तो महापुरूष उसके निवारण के लिए विशेष यज्ञों का आयोजन विद्वानों के माध्यम से सम्पन्न करवाते थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात यजमान दम्पत्ति को आशीर्वाद देते हुए शान्ति पाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

उत्कल वैदिक यति मण्डल की बैठक सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना के सभा भवन में उत्कल यति मण्डल की एक बैठक गुरुकुल आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम ईश प्रार्थना के पश्चात् कार्यक्रम आरम्भ हुआ। तुदुपरान्त दिवंगत आत्माओं की शान्ति एवं सद्गति के लिए दो मिनट का मौन रखकर भगवान से प्रार्थना की गई। नवागन्तुक वानप्रस्थियों ने सभा में अधिकारियों तथा सदस्यों के सम्मुख अपना–अपना परिचय दिया। बैठक का मुख्य विषय था ''आर्य समाज की सांगठनिक सुदृढ़ता कैसे हो, आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कैसे हो तथा आगामी दिसम्बर में होने वाले अभिनन्दन समारोह के आयोजन हेतु प्रचार–प्रसार कैसे हो।''

बैठक में लगभग 40 प्रचारक वानप्रस्थी, संन्यासी आदि उपस्थित थे। सभी ने दो–तीन जिले में प्रचार–प्रसार करने की जिम्मेदारी ली और आर्यसमाज के प्रचार को नई गति देने हेतु अपना–अपना विचार रखे। सभा प्रधान पूज्य स्वामी जी ने भी उद्‌बोधन देते हुए कहा कि हम सबको एक होकर मिलकर ओड़िशा में आर्य समाज के प्रचार के लिए विशेष रुप से ध्यान देना चाहिए। अन्त में शान्ति पाठ पूर्वक सभा की समाप्ति हुई।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**